प्रकाशक—

जगदीशप्रसाद माथुर

झालरापाटन सिटी (राजपूताना)

जब आप उपन्यास पढ़ते पढते थक जायँ और चाहें कि थोडे मे गम्भीर अर्थ बताने वाली कोई उत्तम पुस्तक मिले, तो इस "वचनामृतसागर" को पढ़िये। इसका एक ही वचन आपको ससार मे कुछ कर दिखाने के लायक बना देगा, जिससे आपका नाम अमर हो जायगा।

मुद्रक—

सत्यव्रत शर्मा

शान्ति प्रेस, शीतला गली—आगरा

निवेदन ।

कल्पना और अनुभवसार इन दोनों में बडा अन्तर है । कल्पना कवियों की प्यारी वस्तु है । इसी के ज़रिये वे आसमान के कुलावे मिलाया करते है और इसी में उनकी विशेषता समझी जाती है ।

महात्मा लोग निरी कपोल-कल्पना नही करते । वे तो अपने समस्त जीवन को ससार की विकट समस्याओं में उलझाये रहते है-और अनुभव करते-करते जीवन का सार सकलन करते है । इस तरह तमाम जीवन को कसौटी पर कसते-कसते जब उनको सार वस्तु मिल जाती है, तब वही उनके मुँह से प्रकट होती है, जो ससार के मानवों का हित साधन करती है । उस वाणी का असर प्रत्येक नरनारी पर अवश्य होता है । आज तक न मालूम कितने मनुष्य इन वचनो की चोट खाकर सुमार्ग पर आगये हैं । बल्कि यो कहना चाहिये कि बडे बडे भक्तों और महात्माओ का जीवन भी किसी वाणी

की चोट खाकर ही सुधरा है। गोस्वामी तुलसीदास का ही उदाहरण हमारे सामने है। जब अपनी स्त्री वचनों से गोस्वामी जी का जविन-प्रवाह एक दम बद गया, तब महात्माओं के वचनों की करामात का कहना ही क्या है!

मै कहना चाहता हूँ कि इस पुस्तक में ऐसे महात्माओं के वचनों का सग्रह किया गया है, जिसे बहुत मुद्दत से कर रहा था। ससार के भूले-भटके मनु जो बुरे रास्ते पर जाकर भी उसे अच्छा समझ रहे और अपने कीमती जीवन को नष्ट कर रहे है, इन योगी वचनों से सुमार्ग पर आवे, यही मेरा उद्देश्य है

इन वचनों को मैंने बॅगला, गुजराती, उर्दू, हि के मासिक पत्रों, पुस्तकों, पम्फलेटों और पर्चों सकलन किया है, जिनके रचिताओं का मैं परम कृ हूँ। यदि इसका एक भी वचन किसी नर न का जीवन-पथ परिष्कार कर सका तो मै अपने परि को सफल समझूगा।

विनीत— कृष्णगोपाल

विषय-सूची ।

विषय			पृष्ठ

इस पुस्तक के ५ भाग और छपने वाले हैं

जिनका नाम होगा—

(१) स्वदेशी महात्माओं के वचनामृत ।

(२) विदेशी महात्माओं के वचनामृत ।

(३) मुस्लिम महात्माओं के वचनामृत ।

(४) विविध महात्माओं के वचनामृत ।

(५) अज्ञात नाम महात्माओं के वचनामृत ।

जो महाशय इनके ग्राहक होना चाहे वे अभी से हमारे यहां अपना नाम पता दर्ज करवा दे, ताकि पुस्तक छपते ही उनके पास वी० पी० से भेज दी जाय।

—प्रकाशक

वचनामृतसागर।

(प्रथम तरंग)

१—गुरु की महिमा।

(१)

जो गर्भाधान से लेकर उपनयन तक संस्कारों को विधि से कराता है, वह गुरु कहलाता है। (जैसे पिता)

—याज्ञवल्क्य।

(२)

गुरु उसे कहते है, जो गर्भाधान आदि संस्कार विधि से कराता है और अन्न से पोषण करता है। (पिता)

(३)

जो उपाध्याय शास्त्र द्वारा शिष्य का थोड़ा या बहुत उपकार करता है, उसे भी गुरु जानो। (धर्म-गुरु, शिक्षक)

(४)

थोड़ा हो या ज्यादे, जो वेद का ज्ञान देकर उपकार करते हैं, शास्त्रानुसार वे ही 'गुरु' है। (उपनेता)

(५)

बालक होकर भी यदि वेद या शास्त्र का उपदेश दे तो उसे भी 'गुरु' समझना चाहिए। (ज्ञानी आदि)

—मनु।

(६)

माता को देवी के समान मानो और पिता तथा आचार्य को देव के समान समझो।

—वेद।

(७)

गुरु बीस प्रकार के होते है—(१) शास्त्रोपदेष्टा (२) पिता (३) बड़ा भाई (४) राजा (५) मामा (६) ससुर (७) भय से बचाने वाला (८) नाना (९) दादा (१०) वर्ण मे बड़ा (११) पिता का भाई (१२) माता (१३) नानी (१४) गुरुपत्नी (१५) भुवा (१६) मौसी (१७) सास (१८) दादी (१९) बड़ी बहन (२०) धाय। ये बीसो गुरु के समान पूजनीय है।

—देवल।

(८)

पृथ्वी मे ऐसा कोई द्रव्य है ही नही, जिससे गुरु के हुए एक भी अक्षर का ऋण चुकाया जाय।

(९)

ज्ञान रूपी दीपक का देने वाला गुरु साक्षात् भगवान् है, उसमे जिसकी मनुष्य रूप दुर्बुद्धि होती है, उसका सब किया कराया व्यर्थ हो जाता है।

(१०)

शिव यदि रुष्ट हो जायँ तो गुरु बचा लेता है, पर गुरु के रुष्ट होने पर दुनिया मे कोई भी बचाने वाला नही है।

(११)

उस गुरु से जो अकेला ही माता पिता दोनों की मूर्ति है, कभी द्रोह न करे, चाहे कितनी ही घोर आपत्ति आ पडे।

—निरुक्त।

(१२)

जो नर गुरु से द्रोह करता है, वह मर कर उन लोकों को जाता है, जहाँ कृतघ्नी और ब्रह्महत्यारे जाते है।

(१३)

जहाँ गुरु निन्दा होती हो, वहाँ शिष्य अपने दोनो कानो को बन्द कर ले अथवा वहां से दूसरी जगह चला जाय।

(१४)

जो शिष्य ख़ुद ही अपने गुरु की निन्दा करता है चाहे वह सच्ची हो या झूठी, पर वह शिष्य मरने पर गदहा और कुत्ता होता है। —मनु।

(१५)

गुरु के पास हमेशा उससे हीन दशा मे बैठना चाहिये ।

(१६)

गुरु के उठने से पहले उठना और सोने के बाद सोना चाहिये ।

(१७)

गुरु यदि आसन पर बैठ कर आदेश दे तो शिष्य को चाहिये कि खडे होकर उनकी आज्ञा ग्रहण करे ।

(१८)

(सम्मान रक्षा के लिये) परोक्ष मे भी गुरु का नाम नही लेना चाहिये ।

—मनु ।

(१९)

वेदान्त भी अनेक है और सन्देह भी बहुत है, और जानने योग्य आत्मतत्व अति सूक्ष्म है । इसलिए गुरु के बिना मनुष्य उसे नही जान सकता ।

(२०)

जिसे अपने स्वरूप के जानने की इच्छा हो उसे चाहिये कि हाथ मे समिधा लेकर वैसे गुरु की ही शरण जाय, जो वेदार्थ को जानने वाला और ज्ञानी हो ।

—मुण्डक ।

(२१)

दूसरी तरह कहिये तो विद्यादाता गुरु सबसे बढ़ कर है, क्योंकि माता पिता तो इस शरीर को जन्म देते है, परन्तु गुरु का दिया हुआ जन्म दिव्य, अजर और अमर होता है, क्योंकि ज्ञान न कभी पुराना होता है, न कभी मरता है ।

—महाभारत ।

२—ग्रन्थों के पठन-पाठन की महिमा।

(२२)

मै नरक मे भी उत्तम पुस्तको का स्वागत करूँगा, क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि, जहाँ ये होगी वहाँ आपही स्वर्ग बन जायगा।

—लोकमान्य तिलक।

(२३)

यदि मेरी पुस्तको के बदले मे राजमुकुट भी मेरे पैरों-तले रख दिये जायँ, तो मै उन सब को ठुकरा दूँगा।

—एक इटैलियन।

(२४)

किसी घर मे पुस्तकालय बनाना क्या है, मानो उस घर को सजीव कर देना है।

—सिसरो।

(२५)

चाहे जैसी गल्पे और दूसरी कथाएें आप पढ़ने लग जाते है परन्तु इन्हे बहुत थोड़ी पढ़िये तो अच्छा है। हाँ गीताजी को पढ़िये, और वेदान्त के दूसरे ग्रन्थ पढ़िये, क्योकि तुम्हारी सारी जिन्दगी मे इनकी बड़ी भारी आवश्यकता है।

— स्वामी विवेकानन्द।

(२६)

मैं पुस्तको मे विशेष संलग्न रहता था। इससे मुझे दो मास अधिक जेल मिलती तो मैं कायर नही होता। इतना ही नहीं, परन्तु मेरे ज्ञान मे विशेष वृद्धि हो जाने से उल्टा मैं विशेष सुख-चैन से रहता। मैं, मानता हूँ कि जिनको अच्छी २ पुस्तकों के पढ़ने का शौक है, वे चाहे जहाँ एकान्त मे, आसानी के साथ बैठ सकते है।

—महात्मा गान्धी।

(२७)

मुझे पुस्तके पढ़ने से जैसा आनन्द मिलता है, वैसा आनन्द जगत् मे किसी काम से नहीं मिलता।

—वंकिमचन्द्र चटर्जी।

(२८)

शिक्षण को मजबूत पकड़े रहो, जाने मत दो, क्योंकि यह तुम्हारा जीवन है।

—सालोमन।

(२९)

पुस्तकें युवावस्था मे हमको मार्ग बताती हैं और वृद्धावस्था मे आनन्द देती हैं। ये एकान्त मे हमको आश्रय देती हैं और हमारे जीवन को नपुंसक रूप बनाने से रोकती है।

—कोलियर।

(३०)

मनुष्य को समानता की भूमि पर लाने के लिये यदि कोई सच्चा साधन है, तो वह पुस्तके ही है। यदि सब मनुष्यो के लिये कोई खुला खज़ाना है, तो वह सिर्फ पुस्तकालय ही है।

—लॅगफर्ड।

(३१)

मेरे पुस्तक-प्रेम और पठन-प्रेम के बदले मे यदि कोई समस्त महाराजाओ के मुकुट मेरे चरणो मे डालदे, तो भी मै उन सब को लात मार कर फेक दूंगा।

—फ़ेनेलन।

(३२)

बॉचने का रस, जो मेरे बालपने का अजेय मित्र है, इसके बदले मे यदि कोई मुझे भारत की सारी दौलत दे दे तो भी मै उसको त्याग दूंगा।

—गिबन।

(३३)

इस समय मेरे बहुत से मित्र है और मै उन्हे चाहता भी हूं, परन्तु उन सब से मै वांचन को अधिक चाहता हूं।

—पोप

(३४)

कितने ही ग्रन्थो ने जगत् का बहुत बड़ा हित किया और करते जाते है। ग्रन्थ हमारी आशा को जागृत

रखते है, नवीन उत्साह देते है और श्रद्धा को जागृत करते है। दुःख को शान्त करते है, और कठिन हृदय के कुटुम्बियो के पाले पड़े हुए मनुष्य का जीवन आदर्श बनाते है दूर २ के युगो को और देशो को एक साथ मिलाते है, सौंदर्य के नये जगत् उत्पन्न करते है और स्वर्ग से सत्य को लाते है। इन सब बातो का जब मै विचार करता हूं, तो ईश्वर की इस बख्शिश के लिये उसे अनेक धन्यवाद देता हूं।

—जेम्स फ्रीमेन कलार्क।

(३५)

ग्रन्थ मित्र हीन मनुष्यो के मित्र है।

—जार्ज एस हिलार्ड।

(३६)

मेरे अभ्यास गृह मे मुझे विश्वास पूर्वक बुद्धिमान पुरुषो से ही बात-चीत करने का अवसर मिलता है। बाहर तो मूर्ख लोगो के संसर्ग से छूटना मुश्किल हो जाता है।

—सर विलियम वालरे।

(३७)

कितने ही ग्रन्थो का केवल स्वाद लेना पड़ता है, कितने ही ग्रन्थ निगलने के होते है और थोड़े से ग्रन्थों को चबाकर खाना और पचाना पड़ता है। अर्थात् कितने ही ग्रन्थो का सिर्फ थोड़ा सा भाग पढ़ने का होता है,

कितने ही बाँच जाने के होते है, परन्तु आतुरता से नहीं, और कितने ही ग्रंथ उद्योग, ध्यान और मनन पूर्वक सारे पढ़ने के होते है।

—बेकन।

(३८)

दरिद्रो को दरिद्र मे से निकालने की, दु:खियो के दु:ख दूर करने की, शरीर तथा मन की थकान उतारने की और रोगियो के रोग दूर करने का जितनी शक्ति ग्रन्थो मे है, उतनी शक्ति दूसरी किसी भी चीज मे नहीं है।

—मारडन।

(३९)

जो मनुष्य दिनका काम किये बाद महा बुद्धिमान पुरुषो के साथ संभाषण करता है यानी पुस्तके पढ़कर शान्ति और आनन्द प्राप्त करता है, वह मनुष्य सच्चा सुख भोगता है।

—कार्क्वर्न।

(४०)

जब दु:ख मे सगे सम्बन्धी और मित्र छोड देते है, तब ग्रन्थ ही सच्चा साथ देते है।

—वाशिंगटन इर्विन।
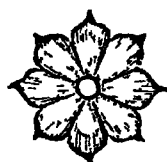
३—उत्तम जीवन चरित्रों की महिमा।

(४१)

सत्पुरुषों के जीवन चरित उसमे भी दैवी अंश से उत्पन्न हुए पुरुषो के जीवन चरित पढ़ने से हमारे दु ख का भार हलका होता है और हमको ऐसा मालूम होता है कि मानो हम दु.ख में से निकलकर ऊँचे उठ रहे है।

(४२)

चरित्र एक प्रकार का दर्पण है। जैसे दर्पण मे मनुष्य अपनी मुखाकृति देख कर उसमे जो नुक्स होता है, उसे निकाल कर कान्ति बढ़ाने की कोशिश करता है, वैसे ही चरित्र रूपी आरसी से उसे अपने स्वभाव के भूषण-दूषण और गुण-दोष दिखाई देने लगते है, और यह देख कर वह दूषणों का नाश और भूषणों मे वृद्धि करने के लिये सचेत हो जाता है।

(४३)

जो काम उपदेश देने से नहीं बनता, वह काम जीवन चरित्रों के पढ़ने से सहज ही में बन जाता है "बहुत परिश्रम करके विद्या पढ़िये, देशाटन कीजिये, स्वदेश-हितैषी बनिये, प्रेम शौर्य्य दिखलाइये" - ऐसे उपदेश मुख से अथवा पुस्तकों से देने से जितना असर पड़ता है, उस की अपेक्षा गुण सम्पन्न और प्रसिद्ध महा पुरुषो के चरित्र पढ़ने और समझने से अधिक असर होता है।

(४४)

उत्तम चरित्र पाठको को बता देता है कि एक सामान्य मनुष्य भी अपने जीवन को कहाँ तक उत्तम बना सकता है, कितना ऊँचा काम कर सकता है और जगत् मे कितना प्रभाव फैला सकता है।

(४५)

चरित्रो के पढ़ने से हमारा चैतन्य सतेज होता है, आशा मे जीवन आता है, नवीन बल आता है, हिम्मत और श्रद्धा आती है। इसी से हम दूसरो के ऊपर श्रद्धा रख सकते है। चरित्रो से ही हम मे महत्वाकांक्षा जगती है, हम उत्तम कामो मे लगते है और दूसरो को लगाने की कोशिश करते है। इस प्रकार जीवन चरित्रो के सहवास मे रहना जीना और उनके उपदेशो से जागृत होना, उत्तम आत्माओ के समागम के बराबर और सर्वोत्तम समाज मे रहने के बराबर है।

(४६)

उत्तम जीवन चरित्रो का प्रभाव इतना अधिक होता है कि हमारे देश मे प्राचीन माहात्माओ के या देवताओ के चरित्र-वर्णन से या महाभारत के उपदेशो से अनेक महापुरुष और सन्नारियो के चरित्र बने है।

(४७)

जब जब मेरा मन किसी अनुचित कार्य में लगना चाहता है, अथवा सदाचार मे उत्साह कम मालूम पड़ता

है, तब तब मैं महान् स्त्री पुरुषो के चरित्र पढ़ता हू और उससे मेरा मन पुनः सावधान हो जाता है।

—प्लूटार्क।

(४८)

मुहल्ले मे मुझे चाहे कोई मिले, परन्तु उसका जीवन जानने, उसकी ज़िन्दगी का अनुभव करने, उसका दु ख और विपत्तियाँ जानने और उसके कार्य की सिद्धि-असिद्धि जानने के लिये मै वहुत प्रसन्न होता हू।

—डानसन।

(४६)

नीति-विशारद पडित कहते है कि पृथ्वी के वडे वडे पुरुषों के जीवन-चरित्र पढने से मनुष्य धीरे धीरे नीच भाव छोडता है और योग्य मनुष्य के उत्तम गुणो पर आसक्त होता है।

(५०)

शिक्षा का ऊंचे से ऊँचा लक्ष चरित्र संगठन है, और चरित्र संगठन में बड़ी से वड़ी सहायता महत् पुरुषो के जीवन-चरित्रों के अभ्यास से मिलती है। इसलिये जीवन चरित्रो के अभ्यास को शिक्षा का बडे से वड़ा अग मानना चाहिये।

(५१)

जीवन चरित्र और इतिहास के पढ़ने से मनुष्य जवान मे वृद्ध बन जाता है; अर्थात् वृद्ध जैसी समझ उस मे आ जाती है। और किसी प्रकार की शक्ति कम नहीं होती।

(५२)

मानव जाति के व्यवहार को उच्च स्थिति में लाने के लिए महान पुरुषों के जीवन-चरित्र जितना काम देते हैं, उतना कोई काम नहीं देता। इस कार्य के बदले में उनका जितना मूल्य ठहराया जाय, उतना ही थोड़ा है।

(५३)

जो पुरुष अपने परिश्रम से महत्ता और उपयोगिता प्राप्त करके महान और उत्तम बने हों, उनके जीवन चरित्र का अवश्य ही अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास से प्रोत्साहन और उच्च विचार प्राप्त होते है।

—हॉरेसमेन।

(५४)

उपनिषद्, क़ुरान, गीता, बाइबल, रामायण और इलियड काव्य आदि चाहे पृथ्वी से चले जायँ, पर उन में वर्णन किया हुआ प्रत्येक विचार और कार्य सदा पृथ्वी पर अमर और प्रकाशमान रहेगा। —लागफेलो।

(५५)

महा पुरुषो के जीवन चरित्र हमें यह याद दिलाते है कि हम ख़ुद भी अपना जीवन उच्च करने के लिए और पीछे अमर छाप छोड़ जाने के लिए शक्तिमान हों।

—लागफेलो।

(५६)

जो जो वस्तु मैंने देखी है और जो जो सुना है, उस के अंश मेरे मे दाखिल हो गये है। —टेनीसन।

४—नारी का महत्व ।

(५७)

पिता, भ्राता, पति और देवर यदि अपना कल्याण चाहे तो उन्हे चाहिए कि वे अपनी पुत्री, वहन, स्त्री और भाभी का कभी अपमान न करे। जहाँ स्त्री की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते है, और जहाँ उनकी पूजा नहीं होती, वहाँ सकल प्रकार के उत्तम कर्म भी निष्फल हो जाते है।

—मनुस्मृति ।

(५८)

नारी पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी है। उसका सब से बड़ा मित्र है। धर्म अर्थ काम का मूल है। जो इसका अपमान करता है, काल उसे नष्ट कर देता है।

—महाभारत ।

(५६)

नारी वन को राजमहलो से भी सुन्दर बना देती है।

—रामायण ।

(६०)

सारे विश्व का राज्य मिल जाय, परन्तु स्त्री न हो तो पुरुष भिक्षुक से भी बुरा है। इस से तो वह कङ्गाल लाख गुना प्रसन्नचित्त है जो सारा दिन परिश्रम करता है और

सन्ध्या को स्त्री का मुँह देख कर सारा दुःख भूल जाता है।

—कूपर।

(६१)

जब तक आदमी अकेला था तब तक स्वर्ग भी उसके लिए काँटो का घर था। देवताओ के गीत, पक्षियो का कलरव, फूलो की मुस्कुराहट, वायु के झोके, सब के सब उसके लिए नीरस थे। वह उदास रहता था और आहे भरता था। परन्तु जब उसे नारी मिल गई, तब उसका सारा दुःख दूर हो गया, और वन के काँटे स्वर्ग के फूल बन गये।

—कैम्बल।

(६२)

संसार मे और कोई वस्तु ऐसी मनोहर नही, जितनी सुशीला, पुण्यात्मा और सुन्दर स्त्री।

—हट।

(६३)

तारे आकाश की कविता है, तो स्त्रियाँ पृथ्वी की। [illegible] के भाग्य का निस्तार इन्हीं के हाथ मे है।

—हारग्रेव

(६४)

कवियों ने स्त्री के क्रोध की ईश्वर-कोप से तुलना की है, परन्तु मुझे अपनी स्त्री के क्रोध मे वह विष कभी दिखाई नही दिया। जब वह क्रोध मे होती है तब मेरी ओर नही देखती, क्योंकि उसे विश्वास है कि मेरी ओर देखते ही उसके क्रोध की आग प्रेम का पानी बनकर बह जायगी।

—सौदे।

(६५)

स्त्री की पुस्तक संसार है। वह पुस्तको से इतना नहीं सीखती, जितना संसार से सीखती है।

—रूसो।

(६६)

यदि तुम पत्थर हो तो पारस पत्थर बनो, यदि वृक्ष हो तो लाजवन्ती का पौधा बनो और यदि आदमी हो तो स्त्री से प्रेम करो।

—विक्टर ह्यूगो

(६७)

स्त्री परमात्मा का सबसे बड़ा जादू है।

—आस्कर वाइल्ड।

(६८)

स्त्री इसलिए उत्पन्न हुई है कि पुरुष की साथिन बने। प्रकृति यही चाहती है, और प्राकृतिक नियमों को पूर्ण करती हुई स्त्री ईश्वरीय शासन को पूर्ण करती है।

—मिल्लर।

(६९)

आओ मेरी प्यारी आओ! मेरे पास बैठ जाओ। रात गुज़र गई है, और चारों ओर प्रकाश का साम्राज्य है। परन्तु तुम्हारे बिन मुझसे प्रार्थना के शब्द नहीं कहे जाते। आओ मेरे पास बैठो। तुम परमात्मा से मेरे लिए प्रार्थना करोगी, मैं तुम्हारे लिए करूँगा।

—ऐलन कनिंघम।

(७०)

हे सुकुमारी! विधाता ने तुझे पुरुषों को ठीक करने के लिए बनाया है। यदि तू न होती तो हम पशु के समान होते। स्वर्ग मे क्या है, जो तुझ में नहीं? अद्भुत ज्योति, पवित्रता, सत्य, अनन्त आनन्द, और अमर प्रेम, सब कुछ तुझ मे है।

—आटवे।

(७१)

पत्नी की सृष्टि मे ईश्वरीय प्रकाश है। वह एक मधुर सरिता है, जहाँ पति अपनी तृषा निवारण कर सकता है, और अपनी चिन्ताओं तथा दुःखों से मुक्त हो सकता है। पुण्यात्मा पत्नी परमात्मा की सब कृपाओं से बडी कृपा है। वह पति के लिए देवी है, सकल गुणों की मूर्ति है, हीरा है, मोती है, दौलत है। उसके स्वर मे उसे मधुरता और उसकी मुस्कराहट मे आनन्द दिखाई देता है।

—जरमि टेलर।

(७२)

तेरा स्वर्ग तेरी माँ के पैरो तले है ।

—हजरत मुहम्मद ।

(७३)

भारतवर्ष का धर्म, भारतवर्ष के पुत्रों से नहीं, पुत्रियों की कृपा से ठहरा हुआ है । यदि भारत-रमणियाँ अपना धर्म छोड़ देतीं तो अब तक भारत नष्ट हो गया होता ।

—स्वामी दयानन्द ।

(७४)

जो पराई स्त्री को पाप की आँखों से देखता है वह परमात्मा के क्रोध को जगाता है और अपने लिए नरक का रास्ता साफ करता है ।

— स्वामी रामतीर्थ ।

(७५)

किसी स्त्री का स्त्रीत्व भंग करने से पहले मर जाना बहुत ही उत्तम कर्म है । किसी स्त्री को पाप कर्म से बचा लेना सब से बड़ा तीर्थ है ।

—महात्मा गान्धी ।

५—माता और संतान की शिक्षा ।

(७६)

माता के स्वभाव का परिणाम उसके पुत्र मे नजर आता है।

—कार्टर ।

(७७)

एक सुशीला विदुषी माता सैकड़ो स्कूल-मास्टरो से बढ़कर है।

—वीणापाणि ।

(७८)

स्त्री ही बच्चे की प्रथम-शिक्षक और उसके चरित्र का संगठन करने वाली है। इस दृष्टि से स्त्री राष्ट्र की माता है।

—महात्मा गांधी ।

(७६)

प्रत्येक माता यदि अपनी सन्तान को अपनी स्वर्गादपि गरीयसी मातृभूमि की भक्ति और सेवा करने की शिक्षा दिया करे तो न जाने भारत क्या से क्या हो जाय।

—कमल वासिनी ।

(८०)

आज तक जो कुछ मैं ने किया या भविष्य मे करने की आशा है वह केवल मेरी माता की पवित्र शिक्षा का फल है।

—नेपोलियन बोनापार्ट ।

(८१)

प्रत्येक माता की गोद में ही शिक्षालय होना चाहिये ।

—सौभाग्य रत्नमाला ।

(८२)

जो विदुषी माताएँ हैं वे अपने बच्चे के सामने कभी झूठी बात-चीत नहीं करती ।

—सौभाग्य रत्नमाला ।

(८३)

सब की शिक्षा में-विशेषत: कन्याओं की शिक्षा में, हिन्दी का माध्यम तथा धार्मिक शिक्षा का होना परमावश्यक है ।

—डाक्टर सैडलर की कमीशन रिपोर्ट ।

(८४)

उपाध्याय से आचार्य दस गुना, आचार्य से पिता दस गुना, परन्तु पिता से भी दस गुना मान पाने योग्य माता ही है ।

—मनुस्मृति ।

(८५)

जैसे पुरुष का विद्वान होना आवश्यक है वैसे ही, बल्कि उस से भी अधिक, स्त्री का विदुषी होना आवश्यक है; क्योंकि पुरुष की जननी स्त्री ही होती है और यह सर्वथा सिद्ध है कि विदुषी माता का पुत्र अवश्य ही विद्वान् होता है ।

—सौभाग्य रत्नमाला ।

(८६)

एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर है ।

—जार्ज हर्बर्ट ।

६—मित्र और मित्रता ।

(८७)

जल्दी किसी से दोस्ती मत करो, और जल्दी किसी से दोस्ती तोडो भी मत । अपने मित्र को एकान्त मे चिढ़ाओ, पर लोगो के सामने उसकी प्रशंसा करो ।

—सोलन

(८८)

हमारा सच्चा मित्र वही है, जो साहस के साथ हमारी भूलो को हमे बतलाता है । वह बुद्धिमान है, क्योकि वह हमारे उन अवगुणो को जानता है, जिन्हे हम स्वयम अनुभव नही कर सकते । वह विश्वासी है; क्योंकि वह ख़ुशामद मे नहीं भूलता—साफ़-साफ़ कह डालता है ।

—फ़ेल्थम

(८९)

हमे ऐसे ही विश्वासी और योग्य मनुष्य को अपना मित्र बनाना चाहिये जो कभी हमसे रूठ भी जाय, तो भी हमारा गुप्त भेद किसी को न बतलावे, और न दुश्मन बन कर हमे भय मे रक्खे ।

(९०)

हृदय के उस दृढ़ और स्वाभाविक झुकाव को मित्रता कहते है, जो दो आदमियो के बीच पारस्परिक हित और आनन्द की वृद्धि के लिए होता है ।

—एडीसन ।

(६१)

जिसके बहुत से मित्र हों, निश्चय जानो, उसके एक भी मित्र नहीं।

—अरस्तू।

(६२)

संसार में मित्र बहुत कम हैं, और इसीलिए महँगे भी हैं।

—पोलॉक।

(६३)

यह विश्वास रक्खो कि तुम्हारा सच्चा मित्र वही है जो तुम्हारी घृणा और नाराजगी की कुछ भी परवाह न कर तुम्हारी भूलों को एकान्त में तुम्हे बतलाता है।

—सर वाल्टर रैले।

(६४)

मित्रता हमारे आनन्द को बढाती और दु:ख को घटाती है; क्योंकि वह प्रसन्नता को दुगुना करती और विपत्ति को घटाती है।

—सिसरो।

(६५)

मित्रता जल्दी बढ़ने वाला पौधा नहीं है। यद्यपि आदर के उपजाऊ खेत में वह उगता है, तो भी प्रेमपूर्ण मधुरालाप की खाद डालकर उसे बड़ा करना पड़ता है।

—जोना बेली।

(९६)

" बुरो की दोस्ती भोर की छाया के समान है, जो पल-पल मे घटती जाती है। और अच्छे की दोस्ती शाम की छाया के समान है, जो जब तक कि जीवन रूपी सूर्य डूब न जाय, क्षण-क्षण बढ़ती ही जाती है।

—हरडर।

(९७)

ऊँची और पवित्र आत्माओ की दोस्ती मृत्यु से भी नष्ट नहीं होती, बल्कि और भी चमकीली हो जाती है। हमारे मित्र के दोष हमारी आँखो से ओझल हो जाते है, और उनके गुण विशेष ऊँचे तथा पवित्र रूप मे आँखो के सामने नाचने लगते है।

—रौबर्ट हाल।

(९८)

मूर्ख मित्र की अपेक्षा विद्वान् शत्रु भला है।

—हितोपदेश।

(९९)

बनावटी दोस्त अमरबेल के समान है, जो जिस पेड पर रहेगी, उसे सुखा डालेगी।

—बरटन्।

(१००)

सच्ची मित्रता धीरे बढ़ने वाला पौधा है, जो प्रकट और समान योग्यता के खेत मे ही पनपता है।

—चेस्टरफील्ड।

(१०१)

मित्रता को धीरे धीरे बढ़ने दो, यदि वह बेतहाशा बढ़ती है तो निश्चय जानो कि उसका अन्त निकट है। दोस्ती उपहार देकर मत खरीदो, क्योंकि जब कभी तुम देना बंद करोगे—जो एक न एक दिन निश्चय है—तभी वह काफूर हो जायगी।

—फुलर ।

(१०२)

सौगात या उपहार द्वारा दोस्ती जोड़ने की कोशिश मत करो, बल्कि अपने हार्दिक-प्रेम की भेट देकर। इसी प्रकार बल या दबाव से भी दोस्ती नहीं की जा सकती, यहाँ तक कि पशु भी प्रेम ही से पोस मानते है। अपने दोस्त को अपनी सज्जनता से उत्साहित करो। उन्हे भली भाति विश्वास दिलादो कि तुम, सिवा उनकी तुष्टि के और कुछ नही चाहते। इसी तरह, जो दोस्त तुम्हे कुछ भेट करे उसका हृदय से बदला चुकाओ।

—सुकरात ।

(१०३)

प्रेम बड़ा महँगा है, सच्ची दोस्ती उससे भी अधिक महँगी है।

—ला फौन्टेनी,

(१०४)

सच्चे दोस्त सुख मे न्यौता देने पर आते हैं, पर दुःख मे विना बुलाये ही मदद को दौड़ते हैं।

—थियोफ्रेस्टस।

(१०५)

मैत्री आत्माओं के विवाह का नाम है।

—वाल्टेयर।

७—स्वदेश भक्ति ।

(१०६)

सत्य प्रेम से जिसका अन्तःकरण भरा हो, ऐसा मनुष्य किसी कला में निपुण न होने पर भी बहुत देश सेवा कर सकता है ।

—स्वामी रामतीर्थ ।

(१०७)

नाम वह है जो तुम अपनी करतूत से कमाओ, मा बाप का धरा हुआ नाम तो सिर्फ निशान है ।

—अतलातून

(१०८)

यदि भारत वर्ष को स्वतंत्र करना चाहते हो तो पहले खुद स्वतंत्र होओ ।

—पाल रिचर्ड

(१०९)

पददलित भाइयो ! अत्याचारियो से मत डरो । वे शरीर को मार सकते है । आत्मा को नहीं छू सकते ।

—पाल रिचर्ड

(११०)

विनाश के विना विकास नही हो सकता ।

—चित्तरंजनदास

(१११)

अपनी स्वदेश भक्ति का आदर्श, प्रेम और भ्रातृभाव के आधार पर बनाया जा सकता है, क्योकि उसकी दृष्टि एक राष्ट्र की एकता के आगे सार्वभौतिक एकता की तरफ रहती है ।

—अरविन्द घोष ।

(११२)

राजनीतिक सुधार के पहले नैतिक सुधार होना बहुत जरूरी है ।

—मेजिनी ।

(११३)

स्वतन्त्रता कोई साधारण चीज़ नहीं है, इसके लिए पसीने की जगह रक्त की धाराएँ बहानी पड़ती है । पहले इसका मूल्य समझ कर फिर इसके ग्राहक बनो ।

—मैकस्वनी ।

(११४)

देश का बुना हुआ कपडा, चाहे कितना ही बुरा क्यो न हो, सबको पहनना चाहिये ।

—अमीर काबुल ।

(११५)

युवक राष्ट्र के भाग्य-विधाता है । कोई भी शक्ति उनके के तूफान को रोकने मे समर्थ नहीं हो सकती ।

— बर्नार्ड हाउटन ।

(११६)

अगर ग़ुलामी पाप नहीं है, तो पाप फिर कुछ है ही नहीं ।

—अब्राहम लिंकन ।

(११७)

हमारी सभ्यता, उन्नति और हमारा स्वराज्य अपनी आवश्यकताओं या भोगविलासों के बढ़ाने पर नहीं बल्कि उनको घटाने अथवा स्वार्थ त्याग पर निर्भर है ।

—महात्मा गांधी ।

८—प्रेम।

(११८)

परमात्मा, मुझे वह आँख दे जो संसार के सकल पदार्थों को प्रेम की दृष्टि से देखूँ।

—वेद।

(११९)

प्रेम स्वर्ग का रास्ता है।

—टालस्टाय

(१२०)

प्रेम मनुष्यत्व का दूसरा नाम है।

—भगवान् बुद्ध

(१२१)

इस संसार मे एक ही शिक्षा लेने की आवश्यकता है और वह है प्रेम की शिक्षा।

—स्वामी रामतीर्थ

(१२२)

परमात्मा पूजा का नही प्रेम का भूखा है।

—स्वामी दयानन्द

(१२३)

घृणा राक्षसो की सम्पति है। क्षमा मनुष्यत्व का चिह्न। परन्तु प्रेम देवताओ का स्वभाव है।

—भर्तृहरि

(१२४)

प्रेम संसार की ज्योति है।

—महात्मा मनीर।

(१२५)

मेरी आज्ञा यह है कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

—धनपयूशन।

(१२६)

परमेश्वर के प्यारे वे हैं, जो उसकी सृष्टि से प्यार करते हैं।

—आरफ्नांइल्ड

(१२७)

परमेश्वर प्रेम है।

—फ्रेनिन।

(१२८)

मेरी पुस्तकें स्त्री की आँखें हैं।

—मूर।

(१२९)

प्रेम आँखों से नहीं, हृदय से देखता है। यही कारण है कि प्रेम का देवता अन्धा बनाया गया है।

—शेक्सपियर।

(१३०)

बुद्धिमान केवल वही हैं जो प्रेम में पागल हो चुके हैं।

—जोशाफूक।

(१३१)

भोग-विलास और प्रेम में बड़ा अन्तर है।

—रामकृष्ण परमहंस।

(१३२)

मुझे तुझ से प्रेम है, मुझे तेरी चाह है। मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ। रात को सोते हुये यह है, दिन को जागते हुये यह है।

—टामस हुड।

(१३३)

प्रेम खिलौनो से खेलता है, क्योंकि प्रेम का देवता बालक है।

—फोर्ड।

(१३४)

प्रेम अन्धा नेता है। जो इसके पीछे चलता है, रास्ता भूल जाता है।

—कोलेरिज।

(१३५)

प्रेम नगरों मे नहीं, देहाती झोपड़ियों मे बसता है।

—गेटे।

(१३६)

प्रेम मनुष्य की सबसे बड़ी निर्बलता है।

—चाणक्य।

(१३७)

प्रेम मनुष्य की निर्बलता भी है और हथियार भी।

—नीत्शे।

(१३८)

प्रेम पापियों को भी सुधार देता है ।

—कबीर ।

(१३९)

दूसरों से प्रेम करना अपने आपसे प्रेम करना है ।

—एमरसन ।

(१४०)

दण्ड देने का अधिकार केवल उसी को है, जो प्रेम करता है ।

रवीन्द्रनाथ ।

(१४१)

प्रेम की जिह्वा आँखों में है ।

—फ़्लेचर ।

(१४२)

जो प्रेम प्रकट न किया जाय, वह सबसे पवित्र है ।

—कारलाइल ।

(१४३)

प्रेम कभी नष्ट नहीं होता । उसके पवित्र चिंगारे सदैव प्रकाशित रहते हैं । यह स्वर्ग से आता है और स्वर्ग को चला जाता है ।

—मौंटे ।

(१४४)

जो बारम्बार प्रेम करता है, वह प्रेम करना नही जानता।

—गुसाईं तुलसीदास

(१४५)

वह क्या वस्तु है जो साधारण मकान को आनन्द गृह में बदल देती है—प्रेम।

—चासर।

(१४६)

ज्ञान के ठडे प्रकाश मे प्रेम की बूटी कभी नही उग सकती।

— काण्ट।
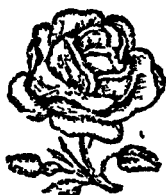
९—सच्चे मनुष्य की आवश्यकता।

(१४७)

दूसरो का सुधार करने वालो की नही, बल्कि अपना सुधार करने वाले सुधारको की आवश्यकता है।

—स्वामी रामतीर्थ।

(१४८)

विश्वविद्यालय की डिगरियाँ प्राप्त करने वालो का नहीं, बल्कि अपने अहंकार पर विजय प्राप्त करने वालो को आवश्यकता है।

—स्वामी रामतीर्थ।

(१४९)

उत्तम उत्तम संस्थाओ की इतनी आवश्यकता नहीं; विस्तृत धन और स्वर्ण-राशियो की आवश्यकता नही, असीम पौरुप और बलवान लेखनी की आवश्यकता नहीं; बल्कि आवश्यकता है-एक मनुष्यता से परिपूर्ण मनुष्य की।

—जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे।

(१५०)

सूअर के सौ पूत किस काम के, कि भूखो मरे ! पर, धन्य है सिहनी का एक पूत, जिसके बल पर वह झाड़ी में निर्द्वन्द्व होकर सोवे ! मनुष्य संख्या बढ़ने से लाभ नहीं, बल्कि—आवश्यकता है—पूर्ण मनुष्य की।

—चाणक्य।

(१५१)

एक महात्मा ने सारे भारतवर्ष मे मनुष्यता से परिपूर्ण मनुष्य की खोज करते हुए उज्जैन नगरी की राह मे खड़े होकर पुकारा—"मनुष्यो! कृपा कर मेरी बात सुनो।" यह सुन कर थोड़ी देर मे उसके चारो ओर बड़ी भीड़ लग गई। यह देख कर महात्मा ने उस भीड़ को सम्बोधित कर बड़ी घृणा के साथ कहा,—"मैंने मनुष्यो को पुकारा है, वन-मानुषो को नही।"

१०—साहस और वीरता।

(१५२)

राजपूती-प्रकृति के अनुसार हमें वही कार्य करने चाहिये, जिनमें साहस और वीरता की झलक हो, जिससे मृत्यु भी हमें गोद में लेते हुए अपने को बड़भागी समझे।

—महाराणा प्रताप।

(१५३)

महाराष्ट्र सैनिक यह नहीं पूछते कि शत्रु-संख्या कितनी है? केवल वे तो यही पूछते हैं कि वे हैं कहाँ?

—महाराज शिवाजी।

(१५४)

मुझे शत्रु के सामने ही मरने दो! जो मुझ पर विजय पाना चाहे उसे कठोर शत्रु से पाला पड़ेगा।

—ड्राइन।

(१५५)

भाग्य साहसी का ही पक्ष लेता है।

—ड्राइन।

(१५६)

जो साहस करके हमें धकेल कर मार्ग में निकलता है, हम उसी के लिए राह छोड़ देते हैं।

—शिक्षक।

(१५७)

विपद् के मुख मे, जहां से छुटकारा नहीं, प्रसन्न मुख खड़ा रहना—सचमुच एक वीर कार्य है। परन्तु, यथार्थ वीरता घोर संकट के स्थान में खड़ा रहना है, जहाँ कोई बाधा हट जाने से नहीं रोकती, परन्तु केवल कर्त्तव्य का अनुरोध हटने नहीं देता। ऐसे स्थान पर खड़े रह कर प्राण-त्यागना, इसी में सच्ची वीरता और साहस है।

—रॉबर्टसन्।

(१५८)

जब कोई दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्य संसार रूपी बलवान बैल के सामने जाकर साहस पूर्वक उसके सींग पकड़ लेता है, तो कभी कभी उसे बड़ा आश्चर्य होता है। और जब वे टूट कर उसके हाथ में आ जाते हैं तब उसे मालूम हो जाता है कि वे केवल भीरु-कर्म-व्यवसाइयों को भय दिखाने के लिये ही लगाये गये थे।

—होलमीज

११—इच्छा और मार्ग ।

(१५६)

निश्चल स्वभाव अपनी इच्छा-पूर्त्ति का मार्ग ढूँढ़ निकालता है ।

मैं कोई मार्ग ढूंढ़ निकालूँगा अथवा बना लूँगा ।

जिसकी इच्छा-शक्ति प्रबल है, उसके लिए कोई बात असम्भव नहीं ।

—भिरेवो ।

(१६०)

दुर्बलता और असावधानी से सत्य का अनुसरण करने वाला, दृढ़ता और सावधानी से असत्य का अनुसरण करने वाले से, किसी प्रकार अच्छा नहीं ।

—सिंपिल ।

(१६१)

वीर-हृदय की दृढ़ इच्छा सहस्रों का सिर नवा सकती है । एक दृढ़ प्रतिज्ञ दुर्बल बौना युद्ध का फल बदल सकता है और भागते हुए भीमाकार मनुष्यों को लौटा कर फिर लड़ने पर उद्यत कर सकता है ।

—ट्यूपर ।

(१६२)

हमारे जीवन का उद्देश्य केवल इच्छा-शक्ति को दृढ़ बनाना है । दृढ़ मनुष्य के लिए सदा ही सुअवसर और सुभीता है ।

—एमरसन ।

(१६३)

दृढ़-प्रतिज्ञ और सत्य-प्रकृति पर ही संसार-चक्र चलता है ।

—पोर्टर ।

(१६४)

आशा, विश्वास और उन्नति-शीलता से विघ्नबाधा सर्वदा दूर रहते हैं और उपस्थित कठिनाई भी हार मान लेती है ।

जेमर्स कौलियर ।

(१६५)

उद्यत, दृढ़ और स्थिर मनुष्य के चारों ओर काई की भाँति स्थान छोड़ कर मनुष्य हट जाते हैं और उसे पूर्ण स्वतंत्रता और स्थान मिल जाता है ।

—जौन फोस्टर ।

(१६६)

घटना वा दैवयोग विरले ही प्रसिद्ध मनुष्यों के अनुकूल हुए हैं, वरना वे पग पग पर प्रतिकूल बाधाओं से युद्ध करके अन्त मे विजयी हुए है ।

—मिल्टन ।

१२—आपत्तिका आदर और कठिनाइयों में सफलता।

(१६७)

जो विजय साधारण होती हैं, उनके प्राप्त करने मे कठिनाइयो का सामना नही करना पड़ता, और जो भीतर बाहर से कमनीय है, उसकी प्राप्ति दारुण कष्टो का सामना करने से होती है। —वीदर।

(१६८)

मनुष्य की सफलता विशेषकर इच्छा शक्ति और परिश्रम पर निर्भर है, जो कठिनाइयो का दृढता से सामना करने वाली, और उद्योग देवता के नाम से पुकारी जाती है, यह देखकर आश्चर्य होता है कि इसके द्वारा किस प्रकार असंभव बाते भी संभव हो जाती है !

—सारजैरट।

(१६९)

किसी स्वतन्त्र हृदय की कार्यदक्षता के सिवाय कोई ऐसा निशंक चिह्न नही, जिसमें साथियो और घटनाओ के पलटने पर भी परिवर्तन नही होता।

—एमसरन।

(१७०)

दुर्भाग्य, छोटे हृदय को दमनकर अपने वश मे कर लेता है, परन्तु विशाल हृदय उस पर विजय पाकर खुद उसे दबा देते हैं। —वाशिंग्टन इरविंग।

(१७१)

बाधाओ, कष्टो और द्वैतभावों को भी बल और शक्ति का उद्गम बनाओ ।

—स्वामी रामतीर्थ ।

(१७२)

प्रकृति जब मार्ग मे कठिनाइयाँ डालती है तब मानसिक बल भी बढ़ा देती है ।

—एमरसन ।

(१७३)

बहुत से मनुष्यो के जीवन बडी बड़ी कठिनाइयो के ही कारण महान् हुए हैं ।

—स्परजियन ।

(१७४)

सुगंधित पुष्प जब तक पेड़ पर लगे रहते है, तब तक इतनी सुगंध नही फैलाते, जितनी वे कुचले जाने और पेले जाने पर फैलाते हैं ।

—गोल्डस्मिथ ।

(१७५)

जिस प्रकार अंधेरी रातें तारो को सुन्दर बनाती है, उसी प्रकार शोक से मनुष्य प्रभावान् होता है ।

—यंग ।

(१७६)

जो मनुष्य जितना मानसिक और शारीरिक कष्ट उठावेगा उतना ही उसका जीवन अधिक सुखमय और धार्मिक होगा।

—होरेस बुशनेल।

(१७७)

दुर्भाग्य और कष्ट से ऐसी योग्यता प्रगट होती है, जो सुखमय जीवन होने पर भी कदाचित् अस्फुटित रह जाती।

—होरेस।

(१७८)

स्वर्ण की अग्नि से और दृढ़ मनुष्य की विपरीत समय से परीक्षा होती है। —सीराज।

(१७९)

ऐश्वर्य से मन दुर्बल होता है, दरिद्रता और अभाव से पुष्ट और बलयुक्त होता है। —हेजलिट।

(१८०)

बड़े मनुष्यो का दुर्भाग्य ही विजय और यश है। पूर्ण शान्ति में आजतक किसी मनुष्य ने भी वृद्धि नही की।

जौननील।

(१८१)

आपत्ति सत्य का प्रथम मार्ग है। —वाइरन।

(१८२)

आपत्ति के समान कोई दूसरी शिक्षा नही है।

—डिसरैली।

(१८३)

आपत्ति मनुष्य बनाती है और सम्पति राक्षस।

—विक्टर ह्यूगो।

(१८४)

केवल आपत्ति ही मित्रो को तौलने की तराजू है।

—पलटार्च।

(१८५)

आपत्ति मे शान्त रहने की याद रक्खो।

—होरेस।

(१८६)

विपत्ति को मान पूर्वक सहन करो।

—नेपोलियन।

(१८७)

संसार मे जो सच्चे मनुष्य होते है, उन पर चाहे अनेक प्रकार के दुःख आवे, चाहे वे दुःखो से मर मिटे, चाहे लाखो शोक और दुःख भोगे, पर सत्य को वे कभी नही छोड़ते।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

(१८८)

आपत्ति हमेशा शाप के समान नही होती। पहली आफ़त कई बार पीछे से सुखदायी हो जाती है। कठिनाइयों को पार करने से ज्ञान मिलता है, इतना ही नही, पर हमारी भविष्य की लड़ाइयो मे उससे हिम्मत आती है।

—शार्प।

१३— प्रतिकूल संयोगों में सफलता।

(१८९)

आपको जिस काम से प्रेम है, उसको करने के लिए आप जल्दी उठ बैठिये और उसमे आनन्द के साथ लग जाइये।

—शेक्सपियर।

(१९०)

किसी भी ऐसे उद्योग का प्रीति के साथ, जिससे मनुष्य रुका हुआ और सुखी रहता है, जन्म लेना, जीवन की क़ीमती से क़ीमती बात है—बड़ी से बड़ी दौलत है।

—एमसरन।

(१९१)

प्रतिभाशाली पुरुपो के इतिहास मे हम बारम्बार देखते हैं कि उन्होंने अपनी ही रुचि के अनुकूल धन्धों मे नज़र डाली है और माता-पिता की सलाह न मानकर अपनी ही सलाह काम में लाये हैं।

—राबर्ट वाट्सं।

(१९२)

बारम्बार यह कहना जरूरी नहीं है कि कोई भी मनुष्य अपने चारित्र्य के सामने हमेशा फ़तेहमन्दी के साथ युद्ध नहीं कर सकता।

—सर एच० हुल्पर।

(१६३)

मानव बुद्धि के इतिहास में भाग्य ही से ऐसा कोई कवि होगा, कोई कारीगर होगा, कोई तत्त्ववेत्ता होगा, कोई वैज्ञानिक होगा, जिसकी प्रतिभा के ख़िलाफ़, अलौकिक बुद्धि के ख़िलाफ़ उसके माता-पिता उसकी प्यारी और उसके शिक्षक न हुए हो। ऐसे मामलो में क़ुदरत सीधे ढंग से बीच मे पड़ कर विजय पाती है। क़ुदरत अपने प्यारों को उनका हक़ दिलाती है और जिनको उसने परिश्रम से उत्पन्न किया है उनको छोड देने की अपेक्षा आज्ञाभंग, झूँठ बोलना, घर से भाग जाना और समय समय पर भटकना, इन कामो मे भी उत्तेजन देती है।

—ई० पी० व्हीपल।

(१६४)

तुम लोग जो आवाज़ नहीं सुनते उसको मे सुनता हूँ। वह कहती है—"मै नहीं रहूँगी। तुम जिस हाथ को नहीं देखते उसे मैं देखती हूँ, वह मेरी तरफ़ इशारा करता है, और मुझे बुला लेता है।

—टिकेल।

१४—निश्चल उद्देश्य।

(१६५)

जीवन एक वाण के समान है, इसलिए तुम्हे अपने लक्ष्य को स्थिर करके धनुष को सम्हालना चाहिये और कान तक उसे खींच कर वाण को छोड़ देना चाहिये।

—हेनरी वानडाईक।

(१६६)

उच्च उद्देश्य और उनकी पूर्ति के लिए यथेष्ट योग्यता और उद्योगशीलता जीवन की अत्यंत आवश्यक वस्तु है।

—गेटे।

(१६७)

हृदय की एकाग्रता ही केवल विजयी होती है।

—बक्सटन।

(१६८)

जो दो मृगो का पीछा करता है, वह एक को भी नहीं पकड पाता।

दुचित्ता मनुष्य अपनी सब बातों मे अस्थिर होता है।

यदि मनुष्य सफलता प्राप्त करना चाहता है तो उसे जीवन मे अपना काम निर्द्धारित कर लेना चाहिये और फिर एकाग्रता से उसे पूरा करने की कोशिश करनी चाहिये।

—फ्रैंकलिन।

(१९९)

हमें ऐसे गुणग्रहण करने से दूर ही भागना चाहिये, जिनमें हम निपुण नही हो सकते । उनमे चाहे हम कितनी ही उन्नति करले, परन्तु अन्त में जब हम उनका गुरुत्व और विस्तार जान लेंगे, तब हमे सदा पश्चाताप होता रहेगा कि ऐसे कच्चे काम मे क्यो इतना बल और समय नष्ट किया !

—दैंटे ।

(२००)

मैं एक ही समय में दो काम साथ साथ नही कर सकता ।

—ग्लेडस्टन ।

१५—कर्मफल और स्वभाव।

(२०१)

जो जैसा करता है वैसा ही फल पाता है।

—गोस्वामी तुलसीदास।

(२०२)

इस धोखे मे मत रहो कि ईश्वर से छल चल जायगा, बल्कि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटता भी है।

—गेलेशियन्स।

(२०३)

कर्म का बीज बोने से स्वभाव का फल मिलता है, स्वभाव बोने से लक्षण उत्पन्न होता है और लक्षण बोने से भाग्य का फल मिलता है।

—बोर्डमैन।

(२०४)

डाली झुकाने से पेड़ झुकता है।

—पोप।

(२०५)

अभ्यास से ही मनुष्य का स्वभाव बनता है।

—शेक्सपियर।

(२०६)

मनुष्य के स्वभाव अदृश्य रूप से एकत्र होते जाते हैं; जैसे नाले एकत्र होकर नदी बनते है और नदियो से समुद्र बनता है।

—ड्राइडन।

(२०७)

संसार मे सद्भाव से असंख्य लाभ होते है, और अच्छा स्वभाव, संसर्ग, विद्या और अनुभवो के प्रभाव से बनना है, सुशिक्षा ही से धर्माचरण की सृष्टि होती है ।

—प्लेटो ।

(२०८)

आरम्भ में स्वभाव की बेड़ियाँ इतनी हल्की होती है कि उनका आभास ही प्रतीत नहीं होता, परन्तु समय पाकर वे इतनी दृढ़ हो जाती है कि उनका टूटना मुश्किल हो जाता है ।

—जौन्सन ।

(२०९)

प्रथम पापाचरण से मनुष्य चौकता है, फिर वही उसे आनन्ददायक प्रतीत होता है, फिर सुगम, फिर मनोहर, फिर चित्ताकर्षक, फिर व्यावहारिक और अन्त मे दृढ़ हो जाता है। इस समय मनुष्य पश्चातापहीन हो जाता है, फिर कठोर हृदय और इसके उपरान्त वह नारकी हो जाता है ।

—टेलर ।

१६—स्वावलम्बन ।

(२१०)

मै समझना हूँ कि परमात्मा की विशाल सृष्टि मे न कोई मनुष्य दूसरे की सहायता करना चाहता है और न उसके योग्य ही है ।

—पेस्टेलोजी ।

(२११)

बच्चा, याद रक्खो, सर्व श्रेष्ठ मनुष्य हमेशा ख़ुद-बख़ुद बने होते है ।

—पेट्रिक हेनरी ।

(२१२)

स्वाधीनता चाहते हो तो अपने बल पर भरोसा रखकर चोट लगाओ ।

—बाइरन ।

(२१३)

परमेश्वर प्रत्येक जीव को भोजन देता है, परन्तु वह उसके मुँह मे नहीं रख जाता ।

—जे० जी० हौलेंड ।

(२१४)

सर्वदा ध्यान रक्खो कि दूसरे तुम्हारे आसरे रहेगे, तुम उनका आसरा नहीं कर सकते ।

—ड्यूमा ।

(३१५)

हमारे उपाय बहुधा हममें उपस्थित होते हैं, परंतु हम उन्हे ईश्वर प्रेरित समझते है।

—शेक्सपियर।

(२१६)

संसार की सर्वोत्तम शिक्षा जीविका-उपाजन के समय प्राप्त होती है।

—वडेल फिलिप्स।

(२१७)

प्रत्येक मनुष्य दो प्रकार की शिक्षा पाता है, एक तो वह जो दूसरों से मिलती है, और दूसरी अति आवश्यक हम ख़ुद अपने जीवन से प्राप्त करते हैं।

—गिबिन।

(२१८)

महापुरुष जो कुछ चाहते हैं, वह आप मे मौजूद पाते हैं, परन्तु क्षुद्र मनुष्य अपनी बांछित वस्तु दूसरो मे ढूंढते फिरते हैं।

—कन्फ्यूशस।

(२१९)

जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य निर्दिष्ट किये जाने की प्रतीक्षा करता है वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा और अपना कर्तव्य अपूर्ण ही छोड़ जायगा।

—लॉवेल।

१७—निर्भयता और दृढ़ता।

(२२०)

यदि दस सहस्र मनुष्य मूर्छित हो जावे, भय से भागे, अथवा अधीनता स्वीकार करले, तो क्या? संसार की भयातुरता पर ध्यान न दो। सेनापति का जो मूलमंत्र 'विजय' है, उस पर ध्यान रक्खो।

—होरेशस बोवर।

(२२१)

भाग्य को, अपने धनुष के सब वाण मुझ पर ही निशाना बाँध कर छोड़ने दो मेरी आत्मा उन सबको अपने ऊपर ढाल के समान सहन कर सकती है, और ज़्यादा से ज्यादा वाणो के लिए तैयार हो सकती है।

—ड्राइडन।

(२२२)

वही यथार्थ, दृढ़ और वीर पुरुष है, जो सारे नगर के विरुद्ध होने पर भी अपना विचार प्रकट करने से नही झिझकता।

लॉगफैलो।

(२२३)

कभी निराश मत होओ, परन्तु यदि निराश हो ही जाओ तो निराशा मे भी सदा कार्य में तत्पर रहो।

—बर्क।

(२२४)

जब तुम अत्यंत संकट मे आ पड़ो और ऐसा मालूम हो मानो अब एक मिनिट भी टिक नही सकते तथा प्रत्येक वस्तु तुम्हारे विरुद्ध होती जाय, तोभी तुम प्रयत्न मत छोड़ो, क्योंकि बराबर उसी समय तुम्हारे कर्मो का चक्कर फिर जायगा।

—हेरियट बीचर स्टो।

(२२५)

तीन वस्तु आवश्यक है—प्रथम दृढ़ता, द्वितीय दृढ़ता और तृतीय दृढ़ता।

—चार्ल्स समनरे।

(२२६)

कठिन परिश्रम करने की शक्ति यदि बुद्धिमत्ता नही है, तो भी उसकी गरज सारने वाली उत्तम से उत्तम वस्तु तो अवश्य ही है।

—गारफील्ड।

(२२७)

यदि तुम मेरा सब तरह से अपमान करो, और मेरे टुकड़े टुकड़े कर डालो, तो भी मै अवश्य धीरज धरूंगा।

—रॉबर्ट हेरिक।

(२२८)

जब कोई मनुष्य प्रत्येक विरोधी बात का खुले दिल से सामना करता है, तब विरोधी तत्त्व भी नरम पड़ जाते

हैं। इसके समान कोई विचित्र चीज मैंने अपनी जिन्दगी में नहीं देखी है।

—हाथार्न।

(२२९)

समझदार आदमी हिम्मत वाला होता है, इसलिये वह किसी काम को छोड़ नहीं देता।

(२३०)

दृढ़ता रक्खो, सच्चा और मजबूत पौरुष बारंबार मिलने वाली विजय का साधन है।

(२३१)

दृढ़ता वाले मनुष्य के साथ एक ऐसी शक्ति लगी रहती है, जिससे वह किसी अपमान से क्रोधित नहीं होता बल्कि क्रोधित होने की आवश्यकता से मुक्त रहता है।

१८—ब्रह्मचर्य ।

(२३२)

मैं जीवन-पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर भूमंडल में वेदों का प्रचार करूंगा। मेरी सारी शक्ति पाखंड के खंडन मे लगेगी। मुझे विश्वास है कि ब्रह्मचर्य की सहायता से मनुष्य को सब कुछ सुलभ हो सकता है।

—शकराचार्य।

(२३३)

इन्द्रियो के विषय यानी भोग विलास मे सुख को मत ढूँढ़ो। अमरत्व का महासगर तुम्हारे भीतर है, स्वर्ग का राज्य तुम्हारे भीतर है। वह सब ब्रह्मचर्य से ही सध सकता है।

—स्वामीरामतीर्थ।

(२३४)

हमें ऐसे ब्रह्मचारी मनुष्य चाहिये, जिनके शरीर की नसे लोहे की तरह और स्नायु इस्पात की तरह मजबूत हों। उनके तन मे ऐसा मन हो, जिसका संगठन बज्र से हुआ हो। हमे चाहिये पराक्रम, मनुष्यत्व, क्षात्रवीर्य और ब्रह्म तेज !

—स्वामी विवेकानद।

(२३५)

मैं विद्यार्थियो और युवको से यही कहता हूं कि वे ब्रह्मचर्य और बल की उपासना करे। बिना शक्ति और बुद्धि के अपने अधिकारो की रक्षा और प्राप्ति नही हो सकती । देश की स्वतंत्रता वीरव्रतियो पर ही निर्भर है ।

—लोकमान्य तिलक ।

(२३६)

अध्यात्म विद्या से ही सच्ची स्वाधीनता मिल सकती है । मानसिक दुर्बलता को त्याग देना चाहिये । ब्रह्मचर्य और योग ही सुख का मार्ग है ।

—योगी अरविन्द घोष ।

(२३७)

यह संसार ही मातृमय है ! कुभावना के लिए स्थान ही कहां है ! इस विचार से ब्रह्मचर्य के पालने मे कठिनता क्या है ? माता स्वयम् अपने पुत्रो की रक्षा करती है ।

—रामकृष्ण परमहंस ।

(२३८)

परमात्मा के राज्य मे प्रिय बनने के लिए अविवाहित जीवन विताना धर्म है । संयम और पवित्रता से ब्रह्मचर्य-मय रहने का स्वर्गीय आदेश है ।

— महात्मा ईसामसीह ।

(२३६)

संसार मे मनुष्य को अपना जीवन, व्यभिचार शून्य और सदाचार युक्त बनाना चाहिये। इसी मे, वास्तविक सख है।

—सुकरात।
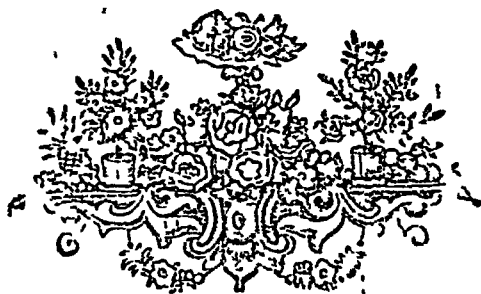
१६—सदाचार और सत्कार्य की महिमा।

(२४०)

वीररक्त का एक बिन्दु भी सारे समुद्र के जल से अधिक महत्वपूर्ण और बलशाली है।

—एमरसन।

(२४१)

किसी देश की सभ्यता का अनुमान वहां की मनुष्य सख्या, नगरो का विस्तार अथवा व्यापार से नहीं होता, बल्कि वहाँ के उत्पन्न हुए मनुष्यो की प्रकृति और सदाचार से होता है।

—एमरसन।

(२४२)

मन के महान न होने से तो मनुष्य का न होना अच्छा है।

—टेनीसन।

(२४३)

आत्मोन्नति करो। दूसरो में जो महत्त्व गुप्त है, परंतु शून्य नहीं है, वह भी तुम्हारे समान बनने के लिये अवश्य प्रकट होगा।

—लॉवेल।

(२४४)

कोई मनुष्य इतना लम्बा हो कि आकाश छूए वा सृष्टि को करतलगत कर सके, परन्तु उसका माप आत्मा और हृदय से होना चाहिये।

—वाटस।

(२४५)

हमारा जीवन कर्ममय है वर्ष मय नहीं, विचार मय है-स्वास मय नहीं, ज्ञानमय है, घड़ी के काँटे से उसकी माप नहीं होती। समय की माप हमें हृदय के आघातों से करनी चाहिये। उसी का जीवन सब से बड़ा है, जो सब से अधिक विचार करता है, जिसका ज्ञान सर्व श्रेष्ठ है और कर्म सर्वोत्तम हैं।

—बेली।

(२४६)

पुरुष अथवा स्त्री की सत्कीर्ति उसकी आत्मा का प्रथम अलंकार है।

एमरसन।

(२४७)

सद्गुण मेरे साथ बीमार नहीं पड़ते, और इसी तरह वे मेरी कब्र मे भी नहीं दफनाये जायँगे।

—एमरसन।

(२४८)

तुम जितने ही अपने अन्त करण के गहरे भाग मे उतरोगे उतनी ही तुम को अपना जीवन अधिक उदात्त और उच्चतर बनाने की इच्छा प्राप्त होगी।

—राबर्टसन।

२०—चारित्र्य की महिमा।

(२४६)

चारित्र्य बल है, सत्ता है। इससे मित्र मिलते हैं, फंड खड़े होते हैं, और सहायता मिलती है। इसी से दौलत, प्रतिष्ठा और सुख का सरल मार्ग खुल जाता है।

—जे० होस।

(२५०)

चाहे किसी काम के लिये मुझे जाना पड़े, पर मैं अपने चारित्र्य को मेरे पीछे रख जाता हूँ।

—शेरीडन।

(२५१)

जगत् में जैसे मनुष्य से कोई बड़ा नहीं है, वैसे ही मनुष्य में चारित्र्य से कोई बड़ा नहीं है।

—डब्ल्यू० एम० इवार्ट्स।

(२५२)

हरएक उपदेश, काव्य या चित्र के पीछे चारित्र्य रहना चाहिये और चारित्र्य का बल उनको मिलना चाहिये। इसके बिना इनमें से एक की भी क़ीमत तिनके के बराबर भी नहीं है।

—जे० जी० हालेंड।

(२५३)

चारित्र्य एक ऐसा हीरा है, जो दूसरे प्रत्येक पत्थरों को घिस सकता है।

—बारटोल।

(२५४)

खबरदार! लोगों को दिखाने के लिये धर्म का आचरण मत करो! अगर ऐसा करोगे तो भगवान से कुछ भी फल नहीं पाओगे।

—ईसामसीह।

(२५५)

जो मनुष्य दूसरे के किसी कर्म को देख कर उसकी निन्दा करता है, उसको स्वयम् वह कर्म कदापि नहीं करना चाहिये। जो दूसरों के दोषों को देख कर आप भी वैसे ही दोष करता है, वह जगत् में हँसी का पात्र होता है।

—महाभारत।

(२५६)

आजकल मेरे दिन-रात कैसे आचरण मे कटते है, ऐसा विचार हमेशा करने वाला मनुष्य कभी दुःख नहीं भोगता।

—शुक्र।

(२५७)

जिसकी उत्तम प्रकृति है, उसका कुसग कुछ नहीं कर सकता। जैसे चंदन के पेड़ पर यदि सांप लिपटे रहे, तौ भी उसमें सांपो का विष नहीं व्यापता।

—रहीम।

२२—मितव्ययता से धन संग्रह।

(२५८)

मितव्ययता से जीवन का आधा संग्राम तय होता है।

स्पर्जदन।

(२५६)

परिमित व्यय, पवित्रता, संयता, सुख और स्वतंत्रता का पिता है, और आत्मा संयम, आनन्द और स्वास्थ्य का मनोहर भाई है।

—डाक्टर जॉनसन।

(२६०)

गृहस्थी के परिमितव्यय पर उतनी ही बुद्धि से काम लिया जा सकता है, जितना किसी साम्राज्य पर राज्य करने में।

एमसरन।

(२६१)

शीघ्रता से संग्रह किया हुआ धन घटता जायगा, परन्तु थोड़ा थोड़ा हाथो से संग्रह किया हुआ धन बढ़ता ही जायगा।

—गेटे।

(२६२)

हद से बाहर थोड़ा भी खर्च हो तो उससे सावधान रहो। ज़रा सा भी छिद्र होने से बड़े बड़े जहाज़ डूब जाते हैं।

—फ्रेंकलिन।

(२६३)

ऋणी होकर उठने से अनाहार सोना अच्छा।

—कहावत।

(२६४)

ऋणी भी दूसरे फंदों की तरह एक फंदा है, जिसमें फंसना तो सहज है, परन्तु निकलना कठिन है।

—शॉ।

(२६५)

मितव्ययता दरिद्र जनों की टकसाल है।

—टूपर।

(२६६)

तुम्हारी आशा और गुण चाहे जो हो परन्तु दूकान पर ऋण करके महलों की आशा में उसे न गंवा दो।

—टुलअर।

(२६७)

जमीन में गाढ़ने के लिए नहीं, सेवकों की सेना खडी करने के लिए नहीं, बल्कि स्वतंत्र होने का उज्ज्वल अधिकार पाने के लिए मनुष्य को मितव्ययी होना चाहिए।

—बर्न्स

(२६८)

बुद्धिमानी के साथ ख़र्च करता हुआ चले तो थोड़े ख़र्चे से भी मनुष्य अपना निर्वाह कर सकता है । और ज्यादा ख़र्चे से तो सारे ब्रह्माण्ड की सम्पदा भी कम हो सकती है ।

—मेकॉले ।

(२६९)

मनुष्य को सदा भावी आवश्यकताओं का ख़याल रखना चाहिये । उसे सदा परिणामदर्शी होना चाहिये । जो परिणामदर्शी है, वह मानो अस्त्रशस्त्र धारण किये हुए तैयार खड़ा है । भविष्य को जानने मे कोई महत्त्व नहीं है, पर भविष्य के लिये तैयार रहने मे बड़ा भारी गुण है ।

—एडवर्ड डेनिसन ।

(२७०)

चीजे खरीदने का जनून न होना ही मानो धन का जमा होना है ।

—सिसरो ।

(२७१)

राज्य की ओर से हम पर जो कर लगे हुए है, वे निस्सन्देह कड़े है, परन्तु यदि यही कर हमको देने हो तब तो हम इन्हें बड़ी आसानी से अदा कर सकते है । पर हम पर तो और भी बहुत से महसूल लगे हुए है जो उनसे भी कई अधिक भारी है । हमको उतना ही महसूल

तो आलस्य से, इससे दुगना घमंड से और चौगुना मूर्खता से देना पड़ता है। अर्थात् इन दुर्गुणों के कारण हमारा कितना ही रुपया और कितना ही समय नष्ट हो जाता है। यदि इस समय का सदुपयोग किया जाय तो महसूल से दुगना तिगुना रुपया जमा हो जाये।

—फ्रेंकलिन।

(२७२)

यदि कोई शिल्पकार अपने नित्य के काम को, चाहे वह कितने ही नीचे दर्जे का क्यो न हो, उच्च विचारों से करता है तो समझना चाहिये कि वह सच्चे दिल से अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है और अपने जीवन को लाभ और भलाई के लिए उन्नत कर रहा है।

—स्टर्लिंग।

(२७३)

भूल कर भी कभी क़र्ज मत लो, इसको एक विपत्ति समझो। सदा अपनी आमदनी से कम ख़र्च करो। छोटे छोटे क़र्ज छोटी छोटी गोलियो के समान है, जो चारो तरफ से आती है और तुम इनसे कदापि नही बच सकते। बड़े बडे कर्ज गोलो के समान है, जो शोर तो नही करते परन्तु हानि बहुत पहुँचाते है। पहले तुम्हें चाहिये कि छोटे छोटे कर्जों को चुका दो, पीछे शान्ति के साथ बडो को चुकाने की चिन्ता करो। यदि तुम शान्ति

और संतोष के साथ रहोगे और कभी आमदनी से अधिक खर्च न करोगे तो कभी धोखा न खाओगे।

—डा० जानसन ।

(२७४)

जो अपनी आमदनी से अधिक खर्च करे और उधार का रुपया न चुकावे, उसे उसी वक्त जेलखाने मे भेज देना चाहिये, चाहे वह कोई भी हो।

—थेकरे ।

(२७५)

यदि तुम्हारे पास धन है, पर तुम उसको अच्छी तरह खर्च करना नही जानते, तो वह धन तुम्हारे सिर पर एक तरह का बोझा है, जो मरते समय ही उतरेगा।

—शेक्सपियर ।

(२७६)

" चाहे जो मिले और चाहे जितना मिले, मुझे इसकी परवाह नही। मै केवल यह चाहता हूँ कि मुझे खर्च से कुछ अधिक मिल जाया करे।

—ओलिवर वेण्डल होलमेज ।

(२७७)

मितव्ययी बनो, पर कंजूस कभी मत बनो। अपनी आवश्यकता को पूरी करो, प्रतिष्ठा को सुरक्षित रक्खो, मित्रो के साथ भलाई करो, रुपया पैदा करो और उसका सदुपयोग करो। सदुपयोग ही रुपये को कार्यकारी और

उपयोगी बना देता है, नही तो रुपया बहुत ही घृणित और तुच्छ पदार्थ है।

—जार्ज हर्बर्ट।

(२७८)

रुपये को ईमानदारी के साथ, जिस तरह हो सके उत्तम उपायो से ही पैदा करो, परन्तु यह सदैव याद रक्खो कि वह रुपया जमीन में गाड़ने के लिये, अथवा बाहरी टीमटाम मे फ़िज़ूल खर्च करने के लिये नहीं है, वह है स्वतंत्रता से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये।

—रावर्टवर्न्स।

(२७९)

अपार धन शाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे और अपात्रो मे खर्च करे, तो एक न एक दिन वह अवश्य भिखारी हो जायगा।

—नीतिवाक्यामृत।

(२८०)

जो मूल धन या पूंजी को बिना बढ़ाये हुए खाता है, वह सदा ही दुखी रहता है—उसकी स्थिति कभी नहीं सुधरती।

—नीतिवाक्यामृत।

२२—विना सम्पत्ति के धनवान होना।

(२८१)

सब से बहुमूल्य और सुरक्षित धन, अपनी सम्पत्ति से, चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो, सन्तुष्ट रहना है।

—सिसरो।

(२८२)

वही मनुष्य सबसे बड़ा धनी है, जो सब से कम पर सन्तोष कर सकता है, क्योंकि प्रकृति का यथार्थ धन सन्तोष ही है।

—महात्मा सुकरात।

(२८३)

मेरा मुकुट मेरे हृदय में है—सिर पर नहीं, और न वह बहुमूल्य रत्नों तथा मुक्ताओं से खचित है और न दृष्टि-गोचर ही हो सकता है। मेरा मुकुट सन्तोष है और यह मुकुट ऐसा है जो बहुत कम प्रजापति पहन सकते हैं।

—शेक्सपियर।

(२८४)

दूसरों को धन के लिए प्रार्थना करने दो, मैं विना सम्पत्ति ही धनवान हो सकता हूँ। मैं प्रत्येक नीच और दरिद्र वस्तु से उत्तम बनने का प्रयत्न करूँगा। मेरी स्वदेश प्रीति में किसी प्रकार की आत्म-प्रियता का धब्बा न लगने पावेगा।

—लार्ड कालिंग वुड।

(२८५)

यदि कोई मनुष्य अपनी थैली अपने ही सिर मे लौट ले तो कोई भी उससे उसे नही छीन सकता।

—फ्रेंकलिन।

(२८६)

यदि कोई मनुष्य अपने धनवान होने की बडाई मेरे सामने करे तो मै उसे मने करूँगा और बताऊँगा कि देखो, मै बिना पैसे के भी अपना निर्वाह कर सकता हूँ। मुझे कोई पैसे से नही खरीद सकता। मैं पैसे के लिए ही किसी का दास नही होसकता।

—एमरसन।

(२८७)

क्या तेरा खज़ाना तेरे पास है? नही। तेरा खज़ाना तो तेरी आत्मा मे है; और वही उसकी खोज कर।

—यग।

(२८८)

जगत् मे केवल पैसे ही ने किसी को सुखी नही किया, इसमे सुख उत्पन्न करने का गुण भी नही है। असल मे तो मनुष्य अपने सद्गुणो ही से सम्पत्तिवान् माना जाता है।

—फ्रेंकलिन

२३—धनवान बनने के तरीके।

(२८६)

धनार्थी मे सब से पहली योग्यता यह होनी चाहिए कि वह ग़रीब खानदान मे पैदा हुआ हो, जिसके पास कुछ पूंजी न हो और जिसको केवल अपने ही बल तथा बुद्धि के सिवाय किसी दूसरे का सहारा न हो। तभी मनुष्य के असली जौहर खुलते हैं और तभी गुप्त शक्तियों का विकास होता है।

—धन कुबेर कारनेगी।

(२९०)

धनवानो की सन्तान से यह आशा कभी मत रक्खो कि वे उन्नति करेगे, क्योकि बडे कारोबार के सम्पादन करने की राह मे धनाढ्य होना सब से बडी रुकावट है। आज तक किसी अमीर आदमी की जाति से कोई बड़ा काम नही हुआ। कोई दौलतमन्द, आविष्कारकर्त्ता या विख्यात ग्रन्थकार नहीं हुआ है। जहानत झोंपडियों मे रहने वालों का हिस्सा है। मध्य श्रेणी के लोगो से ही सदा जाति के नेता पैदा होते हैं। जिनको जीविका के उपार्जन करने के लिए परिश्रम करना पड़ता है, वे ही परिश्रम का आनन्द उठाते है।

—धन कुबेर कारनेगी।

(२९१)

मेरे विचार मे इससे कोई बड़ा गुनाह नहीं है कि कोई आदमी धन कमा कर मर जाय और उसको हरामखोरों के लिए लड़ने को छोड़ जाय। मै क़सम खाता हूँ कि अपनी ज़िन्दगी में ही मैं अपने सारे धन को परोपकार मे लुटा दूंगा।

—धन कुबेर कारनेगी।

(२९२)

नवयुवकों पर जब ज़िम्मेदारी का बोझा पड़ता है, तब उनकी आत्मा के अन्दर का जौहर चमक उठता है। सफलता का रहस्य, सफलता प्राप्त करने के दृढ संकल्प मे छिपा हुआ है।

—धन कुबेर कारनेगी।

(२९३)

जो युवक खेचातानी के जीवन की प्रथम श्रेणी मे शामिल होना चाहता है, वह मेरी शिक्षा पर अमल करे। अगर वह पांच डालर कमावे तो एक डालर बैंक मे जमा करे। जो इस पर अमल करेगा वह हर दम आगे बढ़ने की कोशिश जारी रक्खेगा, और कोई आश्चर्य नहीं कि वह दौलतमन्द हो जायगा।

—धन कुबेर कारनेगी।

(२६४)

मेरे केवल तीन सिद्धान्त हैं। पहला तो ईमानदारी, दूसरा परिश्रम और तीसरा चित्त की एकाग्रता।

—धन कुबेर कारनेगी ।

(२६५)

अमीर बनना है तो एक कोने में बैठ जाओ और विचार करो। कोई भी चीज़ हो, यह ज़रूरत नहीं है कि कोई बड़ी बात ही हो, बल्कि जो चीज़ तुम्हारी नज़र पड़े, उसी पर सोचने लग जाओ। और अगर तुम उससे पैसा नहीं कमा सकते हो तो यक़ीन रक्खो कि तुम्हारे दिमाग़ में फास्फोरस का एक कण भी मौजूद नहीं है।

—फोनोग्राफ़ का निर्माता मि० एडीसन ।

(२६६)

मेरे पिता मेरे पास केवल एक ही शिक्षा छोड़ गये थे। वह शिक्षा यह थी कि बहुत से लोग एक डालर कमाना जानते हैं, लेकिन अक़्लमन्द वह है, जिसको मालूम है कि एक डालर किस तरह बचाया जा सकता है। इसका सिद्धान्त यह है कि दिन की रोशनी में काम करना और रात को आराम से सोना, जिससे दूसरे रोज़ ताज़ा हो जावे।

—मि० सीज़ ।

(२६७)

इरादे का पक्का कर लेना ही कामयाबी की कुञ्जी है। मगर किफ़ायतशारी इससे भी बढ़कर ज़रूरी चीज़ है। नाकामयाबी से लड़ने के लिए हर वक्त तैयार रहना चाहिये।

मि० सीज़।

(२६८)

मुझे हरेक काम मे इसलिए सफलता मिली है कि मैं प्रातःकाल उठता था और कसरत करता था।

—तेल के बादशाह धन कुबेर राकफेलर।

(२६९)

लखपती बनने के लिए प्रति दिन दो घण्टे खेलना जरूरी है, और फिर तमाम दिन जम कर काम करना चाहिये।

—धन कुबेर राकफेलर।

(३००)

अगर धनाढ्य होना चाहते हो तो सन्तोषी मत बनो, सन्तोष उन्नति का शत्रु है।

—मि० फलस्वरी।

(३०१)

जो वेतन एक मास मे मिले, दूसरे मास मे उससे अधिक प्राप्त करने की कोशिश करो।

—मि० फलसवरी।

(३०२)

अपने परिश्रम और ईमानदारी से मालिक को ख़ुश करो। अगर वह तुम्हारी क़द्र न करेगा तो दूसरे लोग तुम्हारी क़द्र करेंगे।

—मि० फलसवरी।

(३०३)

रुपये पैसे की ख़ातिर कभी कोई कमीनी हरकत मत करो।

—मि० फ्लोवर।

(३०४)

मेरे ख़याल मे तो अमीर होने का इसके सिवाय और कोई तरीका नहीं है कि जवान आदमी ईमानदार, महनती, नशे से बचने वाले और किफायतशार हों। अपने मालिक और अपनी जाति के साथ सच्चे हों।

— मि० फ्लोवर।

(३०५)

ख़र्च मे कमी करके कुछ रुपया बचाते जाओ। और अगर अपनी पूंजी को किसी लाभदायक काम मे लगाना चाहते हो तो जहाँ तक संभव हो उम्दा जायदाद ख़रीदने में लगाओ।

—मि० फ्लोवर।

(३०६)

अमीर बनना चाहो तो शराब और तम्बाखू से दूर रहो। कोई मनुष्य धनाढ्य नही हो सकता जब तक उसका दिमाग़ साफ न हो। लेकिन शराब और तम्बाखू पीने वालो का दिमाग़ ठीक नही रह सकता।

—विलियम वाल्डरोफ स्टोर।

२४—क्या पैसे से भी कोई चीज़ बड़ी है ?

(३०७)

लोग भले ही तुझ को धनवान कहे, पर मैं तो तुझे गरीव ही कहूँगा; क्योकि तू अपने संचित धन का उपयोग नहीं कर सकता और सिर्फ़ अपने वारिसो के लिये बचा कर उसे रखता है, ऐसी हालत मे संचित धन तेरा नहीं, उनका है।

कौपर।

(३०८)

पैसे को ही बडा गिनकर अगर जिन्दगी वरबाद कर दी जाय तो फिर बरबाद हुई जिन्दगी को पैसे की क़द्र नहीं रहती।

जापानीज़ कहावत।

(३०९)

स्वार्थमय ज़िन्दगी विता देने के बाद अगर बडा रोज़ा किया जाय तो वह कुछ नहीं है। बल्कि उससे तो ज़्यादा अच्छा यह है कि आत्मत्याग के साथ जीवन बिताया जाय चाहे बाद को सस्ता और हलका कफ़न मिले या मृत्यु क्रिया साधारण तौर पर ही हो।

(३१०)

क्या पैसा सुख दे सकता है ? इस प्रश्न पर ज़रा विचार करेंगे तो आपको मालूम होगा कि इसमे सुबंध रखने

वाले आनंद मे, वैभव मे और चमकदमक मे कितना दुख भरा हुआ है। यंग।

(३११)

जरूरियाते अगर थोडी हो और उनका आधार भी खुद के ऊपर हो तो भला इससे सुन्दर और क्या हो सकता है ?

—एमरसन।

(३१२)

हमारी जरूरियाते जितनी कम होती है, उतनी ही देवो के साथ हमारी समानता अधिक रहती है।

—साक्रेटीज।

(३१३)

उदार और उमराव दिल के बनो। इससे जो बड़प्पन दूसरे मनुष्यो मे मृत अवस्था मे नही पर सुषुप्ति अवस्था मे मौजूद है वह एक साथ जागृत होगा और तुम्हारे बड़प्पन का आदर करेगा। —लावेल।

(३१४)

सोने को तू छुएगा तो कोई हर्ज की बात नही है, परंतु अगर वह तेरे हाथ मे चिपक जायगा तो तेरे मर्मस्थान को घायल कर देगा।

—जार्ज हर्बर्ट।

(३१५)

धन जिनका ग़ुलाम है, वे बड़भागी है, और जो धन के ग़ुलाम है वे बड़े अभागे है।

—हसन।

२५—ग़रीबी का महत्त्व।

(३१६)

काली से काली भूमि में ही सुन्दर से सुन्दर फूल उत्पन्न होते हैं। और ऊंचे से ऊंचे तथा मज़बूत से मजबूत झाड़ पथरीली जमीन से निकल कर आकाश की तरफ़ बढ़ते हैं।

—जे० जी० हालेण्ड।

(३१७)

ग़रीबी बहुत भयंकर चीज है, और कितनी ही बार तो, जो कुछ हममें आध्यात्मिकता होती है, उसका यह नाश कर देती है, परन्तु उत्तर की हवा से ही मनुष्यों में हिम्मत और मज़बूती आती है। दक्षिण के आनन्ददायक पवन से तो मनुष्यमात्र मीठे स्वप्न में पड़ जाते है।

—उद्दा।

(३१८)

ग़रीबी कड़वी और तिरस्कार के लायक़ होती है, तोभी वह कल्याणकारिणी होती है। उससे सद्‌गुण समझ में नहीं आते, पर जिनका विचार ही आना अशक्य है, ऐसी कितनी ही बातें ग़रीबी से—तंगी से ही पूरी होती हैं। इस से मनुष्य के हृदय में साहस उत्पन्न होता है, बुद्धि तेज़ होती है, आग्रह पैदा होता है, दीर्घदृष्टि जन्मती है, धीरज आता है और इसे अगर सहनशीलता से निभा लिया जाय तो जीवन सुधर जाता है।

ड्रायडन।

(३१६)

ग़रीबी छठी इन्द्रिय है।

—जर्मन कहावत।

(३२०)

मैं लक्ष्मी के कृपा पात्र पुरुषों की अपेक्षा ज़्यादे सुखी हूं। अतुल वैभव की सम्हाल करने के लिए उन्हे कितनी चिन्ता करनी पड़ती है—कितने कष्ट उठाने पड़ते है।

— साक्रेटीज़।

(३२१)

उद्योग के मुखियाओ ने अपने जीवन का आरम्भ ग़रीब बालक की हैसियत से किया था इसमे सन्देह नहीं है।

—सेयलो।

(३२२)

पक्का भिखारी ही वास्तव मे एक सच्चा राजा है।

लेसिंग।

२६—सब जगह अच्छा अवसर मौजूद है।

(३२३)

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में एक बार सुअवसर अवश्य आता है, चाहे वह एक दिन, एक रात, एक प्रातःकाल, एक दोपहर एक घण्टा या एक क्षण का ही क्यों न हो। वही मनुष्य सुखी है, जो परीक्षा करना, घात लगाना, कार्य करना और जीवन की नौका पर सदा होशियार रहना जानता है और, ज्योंही शीघ्रगामी अवसर की घड़ी आवे, त्योंही उसे अपने हाथों से मज़बूत पकड़ कर वश में कर लेता है।

—मेरीटाउन सेड।

(३२४)

प्रत्येक मनुष्य और राष्ट्र के लिए एक समय अवश्य ऐसा उपस्थित होता है, जब सत्यासत्य के संग्राम में या उचित अनुचित कार्य में शामिल होने के लिए निर्णय करना पड़ता है।

—लोवेल।

(३२५)

जो मनुष्य सुअवसर से लाभ उठाना नहीं जानता, उसके लिए वह सुअवसर किस काम का है? वह केवल एक चंचल लहर के समान है, जो एक क्षण में विशाल सागर में विलीन हो जाती है।

—जार्ज इलियट।

(३२६)

हमारा काम दूर की अस्पष्ट वस्तुओ को देखना नहीं है, बल्कि पास की वस्तुओ का उपयोग करना है।

—कारलाइल।

(३२७)

उसी शुभ कार्य मे लग जाओ, जो सबसे पास है, दूरके सर्वोत्तम काम के स्वप्न न देखो। वही यश सर्वदा श्रेष्ठ है, जो मनुष्य अपनी प्राकृतिक अवस्था मे पाता है।

—मारले।

(३२८)

सुअवसर कभी दुबारा नही आता, इसलिए अभी कार्य मे लग जाओ। जब भाग्य अनुकूल हो और कर्त्तव्य-पथ-प्रदर्शक हो उस समय भय की लाठी के सामने सिर मत झुकाओ और सुख के सुन्दर मुख दिखाने पर भी उसके फंदे मे मत फँसो, बल्कि इन सब की उपेक्षा करके सीधे लक्ष्य की ओर वीरता से चले जाओ।

—हितोपदेश।

(३२९)

ऐसा कोई भी मनुष्य जगत् मे नहीं जन्मा, जिसके लिये कोई काम न बनाया गया हो।

—लावेल।

(३३०)

संशोधन का विशाल समुद्र हमारे आस-पास आ रहा है। इसमे ज्यो ज्यो खोज की जाती है; त्यो त्यो इसमे से विशेष नवीनता मिलती जाती है। और इस खोज के काम मे लगने के लिए किसी बादशाह से आज्ञा लेने की भी जरूरत नहीं है।

—एडवर्ड एवरेट।

(३३१)

जब तक मनुष्य किसी भी वस्तु के लिए परिश्रम नहीं करेगा, तब तक वह उसके सामने नहीं आवेगी।

—गारफील्ड।

(३३२)

मौके को ढूँढने की होशियारी, उसको पकड़ने की कुशलता और हिम्मत, उसको अधिक से अधिक फल पाने के काम में लगाने का बल और आग्रह, ये ऐसे मर्दानी गुण हैं, जिनसे अवश्य ही विजय मिलती है—मिले बिना रहती ही नहीं।

—ओस्टीन फैल्प्स।

(३३३)

मैं कोई रास्ता ढूंढ ही निकालता हूँ। दुर्भाग्य से ही कोई दिन ऐसा जाता होगा, जिस दिन मुझे आगे या पीछे हित करने का मौका न मिलता हो।

—डब्ल्यू० एच० बार्लि।

(३३४)

जीवन में एक बार भी जिस मनुष्य पर भाग्यदेवी की कृपा नहीं होती, ऐसा मनुष्य कोई नहीं है।

—कार्डिनल ।

(३३५)

कितने ही क्षण ऐसे होते हैं कि जो वर्षों से भी अधिक मूल्यवान् होते हैं।

—डीन आल्फ्रेड ।

(३३६)

मनुष्य जीवन में कोई संयोग ऐसे आते है कि, उनका ठीक समय पर लाभ उठाने से नसीब खुल जाता है। पर दूसरी बार वे नहीं आते।

२७—अवसर से तत्काल लाभ उठाना ।

(३३७)

कब शुरू करना, ऐसा विचार करते करते कई बार ऐसा होता है कि काम करने की शुरूआत ही अशक्य हो जाती है ।

—क्वीटीलियन ।

(३३८)

जब मूर्ख कुछ निश्चय करता है, तब बाजार अनुकूल नहीं होता ।

—स्पेन की कहावत ।

(३३९)

दौड़ना व्यर्थ है, पर समय पर निकलना मुख्य बात है ।

—लाफोण्टन ।

(३४०)

वर्त्तमान को उसके अगले भाग से पकड़ो ।

—शेक्सपियर ।

(३४१)

जवानी का सारा समय खास तौर पर रचना, ज्ञान-वृद्धि और शिक्षण का समय है । ऐसा एक भी घंटा नहीं, जिसमे प्रकाशमान भविष्य न समाया हुआ हो ।

—रस्किन ।

(३४२)

नदी के एक ही प्रवाह मे तुम दो दफ़े नहीं नहा सकते। समय का प्रवाह भी ऐसा ही है, वह गया सो वह गया।

—हिरेक्लीटस।

(३४३)

जो मनुष्य निश्चय किये हुए समय मे निश्चय किये हुए ठिकाने पर जाने मे देर करता है, वह कभी सन्मान और विजय नहीं पाता।

—डा० फिच।

(३४४)

सर वाल्टर रेले से एक मनुष्य ने पूछा कि आप इतने थोडे समय मे इतना ज़्यादा काम कैसे कर लेते हो जवाब मिला कि जब मुझे कुछ करना होता है तब मैं उसे उसी वक्त कर डालता हूँ। देर करने से विवेक शक्ति ज़्यादे हो, तो भी वह निष्फल जाती है।

(३४५)

सच्ची बात तो यह है कि अगर तुमको दुनिया मे कुछ काम करना है, तो किसी से मत डरो और आपत्तियो के कुण्ड मे उसी समय कूद कर आगे बढो। उससे अच्छे प्रसंग का इन्तजार करना बुद्धिमानी नहीं है।

—रेवरंड सिडनी।

२८—समय की महिमा ।

(३४६)

क्या तुम को अपने जीवन से प्रेम है ? यदि हां, तो समय मत गुमाओ, क्योकि जीवन समय से ही बना है ।

—फ्रेंकलिन ।

(३४७)

अनंतता भी मिनिट की कमी को पूरा नही कर सकती ।

—प्राचीन कवि ।

(३४८)

घंटो का नाश होता है और वह हमारे नाम चढ़ता है ।

—आक्सफर्ड के एक घडी के चदे के ऊपर का लेख ।

(३४९)

मैने समय गुमाया और समय से ही अब मै क्षीण हुआ हूँ ।

—शेक्सपियर ।

(३५०)

मनुष्य की जिन्दगी के हरेक घटे मे उससे खास काम हो जाता है और वह ऐसा नहीं होता कि सारी जिन्दगी के और किसी घंटे मे हो सके । एक बार एक घंटा गया तो फिर वह गया ही ।

—नोयल पेटन ।

(३५१)

कोई भी मनुष्य उम्र मे छोटा हो, परन्तु यदि वह समय न खोवे तो घंटो मे वह बड़ा गिना जा सकता है।

—बेकन।

(३५२)

मेरा कहना सच्चा मानना कि तुमको स्वप्न मे भी जिसका ख़याल नही होगा, ऐसा व्याज दर व्याज के साथ, समय की कोरकसर का लाभ तुमको पीछे की जिन्दगी मे मिलेगा। समय को खो देने से मनुष्य की मानसिक और नैतिक मजबूती, अधिक से अधिक—आशा से भी अधिक ढीली पड़ जाती है।

—ग्लेडस्टन।

(३५३)

जवानी का एक भी घटा ऐसा नही, जिसमे कुछ भविष्य न हो। ऐसी एक भी पल नही, जो एक बार चली जाय तो फिर सोचा हुआ काम हो सके। एक भी प्रहर यदि भुला दी जाय, तो फिर ठंडे लोहे के डंडे पर प्रहार करना पड़ता है।

—रस्किन।

(३५४)

सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच के दो घंटो को, जो के घटे हैं और हीरे जैसे साठ मिनिटो से जड़े हुए है,

उनको पकड़ने के लिये कोई इनाम नहीं है, क्योकि वे पकड़ने मे नहीं आसकते, वे तो हमेशा के लिये चले गये है।

—हारेस मान।

(२५५)

वर्त्तमान की नजर अगर तुम को मिल जाय तो प्राचीन और भविष्य की दुनिया तुम्हारी आँखो के सामने खड़ी हो जाय।

—एमरसन।

२६—सक्षेप में अभिप्राय प्रकट करना ।

(३५६)

मनुष्य चाहे राजसभा का सभासद हो या वक्ता हो, पर उसके भाषण मे शिक्षा देने वाली या भाषण को आकर्षक बनाने वाली चीज़ "संक्षेप' होती है ।

—सिसरो ।

(३५७)

शब्द पत्तो के समान है । जहाँ वे अधिक होते है वहाँ के नीचे का अर्थ भाग्य मे ही मालूम हो पाता है ।

—पोप ।

(३५८)

शब्द जितने कम होते है, प्रार्थना उतनी ही अधिक सरस होती है ।

—लूथर ।

(३५६)

तुम जो कुछ लिखो या बोलो उसमे थोड़े मे ज्यादा का समावेश करो ।

—जोन नील ।

(३६०)

जहाँ आपका कहना समझ मे आवे या न आवे वहाँ सक्षेप बहुत अच्छा काम करता है ।

—बटलर ।

(३६१)

अकेली एकाग्रता को ही विजय मिलती है।

—चार्ल्स-बकस्टन।

(३६२)

सायरस डबल्यू फील्ड के पास जो आदमी आते उनसे वह कहता था कि "थोडे मे कह दीजिये, समय बहुत क़ीमती है।"

(३६३)

कुछ भी कहना हो, उसे कह डालो। और जब कह चुको, तब एक दम बंद कर दो।

—टायरन एडवर्ड्ज़।

(३६४)

अगर तुम को मर्मभेदी बोलना हो तो थोडे मे बोलो। जैसा किरणों का काम है, वैसा ही शब्दो का काम है। उनका जितना संक्षेप मे समावेश किया जाय, उतना ही अधिक प्रभाव होता है।

—रूथे।

(३६५)

थोडे शब्दों मे अधिक कहने मे, अपने विचारो को पसंद करने मे, जो हमें कहना हो उसका क्रम और व्यवस्था रखने मे और शान्ति से बोलने में सच्ची सुरुचि समाई हुई है।

—फेनलो।

(३६६)

जब सादी और सत्य बात कहने के सिवाय मनुष्य को दूसरी कोई तदबीर नही सूझती तब वह संकुचित सीमा मे बहुत कह सकता है।

—स्टील।

३०—स्वास्थ्य-रक्षा ।

(३६७)

मनुष्यों को आरोग्यदान करने से पुरुष जितना ईश्वर के चरणों के निकट पहुंचता है, उतना और किसी उपाय से नहीं पहुंचता ।

—सिसरो ।

(३६८)

आरोग्य सब से श्रेष्ठ है। मुझे केवल एक दिन के लिये ही आरोग्य दो तो मैं उसके सामने चक्रवर्त्तियों के वैभव का भी परिहास कर दूंगा।

—एमरसन ।

(३६९)

शरीर से अत्यंत दुखी रहने वाले धनी की अपेक्षा नीरोग और बलवान ग़रीब बहुत अच्छा है। आरोग्य और उत्तम शरीर सम्पत्ति सारे सुवर्णों से श्रेष्ठ है और सुदृढ़ शरीर अपार धन से भी बढ़ा-चढ़ा है। नीरोग शरीर के सामने धनिकता की कोई क़ीमत नहीं, और नित्य बीमार रहने की अपेक्षा मरण कहीं अच्छा है।

—एकलोजियास्टिक्स ।

(३७०)

प्राय: लोग शरीर की, जो इस मर्त्य लोक में आत्मा का पवित्र मंदिर है, जरा भी परवाह नहीं करते, बल्कि

दुरुपयोग तक करते है। स्वच्छ, भरा हुआ, गठीला, शीघ्र ही पूर्व स्थिति को प्राप्त करने वाला, कठिन संकट के लिए तैयार, भरोसेदार, सुदृढ़, प्रत्येक काम के लिए तत्पर, स्वस्थ दुःख रहित, अपने पुरुषत्व के प्रवाह मे आनंद से बहने वाला, नित्य के धधो की रगड़ से न छीजनेवाला, प्रसन्नता सुस्वभाव, सुखभोग और साक्षात् श्रम मे भी जीवात्मा को विनोद का स्थान बनाने वाला, ऐसा शरीर प्राप्त होना ईश्वर का एक अपूर्व देन है और एक उत्तम द्रव्य कोष है।

—लूथर।

(३७१)

ईश्वरीय नियम पालने ही से शरीर नीरोग रह सकता है—शैतानी नियम पालने से नही। जहां सच्चा आरोग्य है, वही सच्चा सुख है।

— महात्मा गाधी।

(३७२)

रक्त को शुद्ध करने वाली सब दवाइयो मे से स्वच्छ वायु सब से उत्तम दवा है।

—एक प्रसिद्ध डाक्टर।

(३७३)

अच्छी हवा सांस लेने के लिये मिल सके, इसके लिये प्रत्येक मनुष्य को कम से कम ८०० घन फुट जगह सोने के लिये चाहिये और उस जगह मे अच्छी तरह से हवा आने-जाने के लिये काफी खिडकियाँ झरोखे होने चाहियें।

—डा० हक्सली।

(३७४)

प्रत्येक मनुष्य को, दिन मे, कम से कम एक वार, सारे शरीर की अच्छी तरह सफ़ाई करनी चाहिये।

—डा० निकोल्स।

(३७५)

'युवको के जीवन मे सब से वड़ी और नहीं तोड़ी जा सकने वाली शर्त यह होनी चाहिये कि वे अंदर और बाहर पवित्र रहे। उनके जीवन के समस्त कार्यो मे शुचिता हो अर्थात् वे ब्रह्मचर्य का पालन करें।

—महात्मागांधी।

(३७६)

मैं आप लोगो से आग्रह पूर्वक कहता हूं कि आज से आप सारी कुवासनाओं और कुप्रवृत्तियों का दमन करके पवित्र जीवन व्यतीत करने का संकल्प करो।

—महात्मागांधी।

३१—आरोग्यता और दीर्घायु ।

(३७७)

वैभव और ऐश आराम के ढेर करो, पर तन्दुरुस्ती उनसे बढ़ जायगी ।

—ग़ुलिया वाईं हो० ।

(३७८)

यह प्रकाशमय जगत् कि जहाँ प्रभु का तेजोमय तख़्त विराजमान है, प्रभु की सारी महिमा नहीं है। यह पृथ्वी कि जिसके आस-पास का समुद्र लहरे मार रहा है और जहाँ असंख्य टापू मौजूद है, प्रभु की सारी महिमा नहीं है। परन्तु तेरे अद्भुत शरीर की तरफ़ नज़र डाल। तुझे मालूम होगा कि प्रभु की अनत दीर्घ दृष्टि वहा भी वैसी ही मौजूद है।

—होम्स ।

(३७९)

सुख देने वाली आरोग्यता ! तू सोने और धन के ढेरो से भी ज़्यादे क़ीमती है। आत्मा का विकास करने वाली तू है, शिक्षा ग्रहण करने वाली तू है, और सद्गुणो का मज़ा चखाने वाली आत्मा की सारी शक्तियो का विकास करने वाली तू है, जिसके पास तू रहती है, उसे किसी वस्तु की चाह नहीं रहती। और जिसके पास तेरी

कमी है वह कंगाल है और उसे हरेक चीज की जरूरत रहती है।

—स्टर्न।

(३८०)

आरोग्य और आनंदी स्वभाव सौन्दर्य उत्पन्न करने वाली चीज है।

—डा॰ पार।

(३८१)

मनुष्य एक दूसरे के निकट जितना ज़्यादे रहता है, उतना ही उसका जीवन संक्षिप्त बनता है।

—डा॰ पार।

(३८२)

कितने ही मनुष्य अपने दाँतों से अपनी क़ब्र तैयार करते हैं।

—सिडनी स्मथ।

(३८३)

सूर्य का प्रकाश आने देने के लिए अगर आप दरवाज़ा बन्द करेंगे तो डाक्टर को अन्दर दाखिल करने के लिए आपको दरवाज़ा खोलना पड़ेगा।

—इटेलियन कहावत।

(३८४)

ईश्वर की चक्की चाहे धीरे धीरे पीसती है, पर वह पीसती है बहुत बारीक!

—फ्रेडरिक वॉन क़ागो।

(३८५)

कुदरत कुकर्म की सजा तुरन्त नही देती, इसी से मनुष्य कुकर्म मे लग जाते है ।

—एस्किलजियस्टिस ।

(३८६)

दीर्घायु होने की इच्छा हो तो धीरे धीरे जीने की जरूरत है ।

—सिसरो ।

(३८७)

यदि तुम अपनी बुद्धि की बात नही सुनोगे तो वह अवश्य तुम्हारा नाश कर देगी ।

—रिचर्ड ।

(३८८)

आरोग्यता शरीर की पवित्रता है । लड़कियो को जिस प्रकार अपने शिक्षक से पिटते हुए लज्जा मालूम होती है उसी प्रकार मनुष्य को अपनी मूर्खता से उत्पन्न हुई बीमारी के लिए लज्जित होना चाहिये ।

—मिसेज चेनी ।

(३८९)

तन्दुरुस्त होने की इच्छा करना, एक प्रकार की दवा है ।

(३९०)

उत्तम मन शरीर को भी उत्तम बनाता है ।

—शेक्सपियर ।

३२—प्रसन्नता और आरोग्यता।

(३६१)

आनन्दी पुरुष लम्बी आयुष्य भोगते हैं, और उस पर उन का प्रेम भी लम्बे समय तक रहता है।

—बोवी।

(३६२)

खुश मिज़ाज मे अजीब ताकत रहती है। इस की जीवन-शक्ति अटूट है। किसी भी तरह की कोशिश को उपयोगी बनाना हो तो वह आनन्द युक्त होनी चाहिए। उस मे आनन्द, आनंद का लावण्य और प्रकाश का सौन्दर्य होना चाहिए।

—कार्लाइल।

(३६३)

सारे सद्गुणो मे आनन्दी स्वभाव सब से ज़्यादा लाभदायक है।

—एस० सी० गुडरीच।

(३६४)

प्रसन्नता एक अजीब ताज़गी देती है।

—टेलीरेड।

(३६५)

एक पातक सब जगह देखने मे आता है। प्रत्येक मनुष्य उसकी अवज्ञा करता है, और चारित्र्य का मूल्य

ठहराने में उसकी बहुत कम जरूरत समझी जाती है। वह पातक स्वभाव का चिड़चिड़ापन है।

—हेलन हंट।

(३९६)

मुझे एक प्रामाणिक हँसने वाले की जरूरत है।

—सर वाल्टर स्काट।

(३९७)

आज की चिंता से नहीं, पर कल की चिन्ता से मनुष्य दबा जाता है।

—जार्ज मेकडोनल्ड।

(३९८)

जो दुःख आया नही हैं, उस से हमको कितना नुकसान हुआ है।

—जेफर्सन।

(३९९)

अड़चन या आफत का निश्चय नहीं कर लेना चाहिए। शायद वह आफत आवे ही नहीं। उस की चिन्ता करने से क्या लाभ! हमेशा आनन्द में रहना चाहिए।

—फ्रैंकलिन।

(४००)

काम से मनुष्य नही मरता, पर काम से घबरा जाने से मरता है।

—बीचर।

(४०१)

.ख़ुश करने की कला .ख़ुश होने में समाई हुई है। सुशील और प्रीतिपात्र बनने के लिए मनुष्य को चाहिए कि .ख़ुद से और दूसरो से सन्तुष्ट रहे।

—हेज़लिट।

३३—आत्मसंयम।

(४०२)

चरित्र की दृढ़ता दो बातो से प्रकट होती है—इच्छा शक्ति और आत्मसंयम से। इसलिए, इस के लिए दो बातो की ज़रूरत है—दृढ़ विचार और उस पर पूर्ण अधिकार।

—रॉबर्टसन।

(४०३)

यथार्थ विजय आत्मा पर विजय पाना है और उस के बिना विजयी मनुष्य केवल दूसरे प्रकार का दास ही है।

—टॉमसन।

(४०४)

जिस घड़ी कोई मनुष्य दासता प्राप्त करता है, उसी घड़ी उसकी आधी योग्यता नष्ट हो जाती है।

—ओडेसी।

(४०५)

जो आत्मा पर विजय पाता है, और इच्छा भय तथा क्रोध को दमन करता है, वह सब से अधिक बलशाली है।

—मिल्टन।

(४०६)

जो व्यक्ति मनुष्यत्व को प्राप्त करना चाहता है, उसे अपनी आत्मा के विस्तृत राज्य पर अधिकार रखना चाहिए।

—शेली।

(४०७)

आत्म त्याग का प्रचार करो और उसके साधन मे सुख का अनुभव करो। इस ढंग को तुम इतना उत्कृष्ट बना सकते हो, जिस का किसी ने स्वप्न मे भी विचार नही किया होगा।

—वाल्टर स्काट।

(४०८)

मुझे तो ऐसा मनुष्य दीजिये जो मनोविकार का गुलाम न हो ताकि मै उसे अपने हृदय के गहरे भाग मे स्थान दूं।

—शेक्सपियर।

(४०९)

जो मनुष्य क्रोध करने में विलम्ब करता है, वह एक बलवान मनुष्य की अपेक्षा उत्तम है, और जो अपने मन पर सत्ता चलाता है, वह एक नगर को जीतने वाले की अपेक्षा उत्कृष्ट है।

—बाइबल।

३४—कौनसा उद्योग करना चाहिये ?

(४१०)

अपनी शक्ति कितनी है, यह बात पशु भी अच्छी तरह जानते है। परन्तु मनुष्य ऐसा प्राणी है कि क़ुदरत की स्पष्ट आज्ञा को नही मानता और अपनी मूर्खता के कारण उसकी आज्ञा के विरुद्ध काम करता है, और जिधर अपनी बुद्धि का झुकाव नही होता उधर मूर्खता से सारी तदबीरो को काम में लाता है।

—स्वीफ़्ठ।

(४११)

कोई भी उद्योग हो; चाहे टोकरियां बनाने का धंधा हो या पुतलियाँ बनाने का काम हो, नहरे खोदने का धंधा हो या काव्य रचना का काम हो। पर, जिससे मनुष्य को काम और सुख मिले उस उद्योग के लिए जन्म लेना मनुष्य का बड़े से बड़ा भाग्य है।

—एमरसन।

(४१२)

अपने काम का निश्चय होने के लिए जो राह देख कर बैठे रहते है वे मरेंगे और उनका काम अधूरा रह जायगा।

—लावेल।

(४१३)

जैसे तुम क़ुदरती हो वैसे ही बने रहने की कोशिश करो। तुम्हारी अपनी बुद्धि और अपनी वृत्ति का मार्ग

मत छोड़ो। .कुदरत ने जिसके लिए तुमको बनाया है, वही बनोगे तो विजय पाओगे। अगर उससे कोई दूसरा बनने की कोशिश करोगे तो सफलता नही मिलेगी और नालायक़ कहलाओगे।

—सिडनी स्मिथ।

(४१४)

अपना कर्त्तव्य पालन करने का जितना तुम विचार करोगे, उतना ही तुमको मालूम होजागा कि मुझ मे कितना पानी है। पर तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है ? समय की ज़रूरीयात।

—गेटे।

(४१५)

ऊँचे काम करो, पर दिन भर उसके स्वप्न में मत रहो। इससे जीवन, मृत्यु और जगत् सभी एक महान, मधुर और भव्य सगीत बन जायँगे।

—चार्ल्स किंगस्ल।

(४१६)

मनुष्य के शरीर से और मस्तिष्क से होने वाले काम की भी कुछ हद होती है। जो मनुष्य जिस उद्योग के लायक़ नहीं है, वह अगर उस में अपना बल नहीं गुमावे तो वह भला आदमी कहलाता है।

—ग्लेडस्टन।

(४१७)

सफलता को ख़रीदने के लिए कई मनुष्यों को अपने शरीर का एकाध टुकड़ा काट देना पड़ता है।

—दल्वर।

(४१८)

कोई भी मनुष्य अपनी प्रकृति के विरुद्ध प्रयास निरन्तर नही कर सकता और सफलता नही पा सकता। जीवन को सफल बनाने के नियमो मे से एक नियम यह है कि अपने जीवन की इस प्रकार योजना करनी चाहिये, जिससे शरीर और स्वाभाविक वृत्तियो का निरोध करने के लिए हमे सारा बल न खर्चना पड़े, और सहज ही मे उसके सदुपयोग से हम सफल हो सकें।

—अल्बर।

(४१६)

जिस मनुष्य के पास एक धंधा है, उसके पास एक जागीर है।

—फ्रेंकलिन।

(४२०)

प्रकृति अपनी प्रत्येक सन्तान को बनाते समय, उसको किसी न किसी काम की एक खास योग्यता अवश्य दे देती है।

—लॉवेल।

(४२१)

बहुत करके अरुचिकारक धंधे मे पड़ने से जितने मनुष्य असफल होते है, उतने रुचिकर धंधा करने मे नही होते।

—डा० मेथ्यूज।

(४२२)

व्यापार धंधा मनुष्य को उन्नत नही बनाता, क्योंकि उसमे कितने ही प्रपंच करने पडते है। असल में, धंधे में धार्मिक प्रवृत्ति और नियमबद्धता होनी चाहिए।

—लिंडल।

(४२३)

उपयोगी विपय का ज्ञान अधिक प्राप्त करना चाहिये।

—थॉरो।

३५—लगन और धीरज।

(४२४)

प्रत्येक अच्छा काम पहले असंभव सा मालूम होता है।

—कार्लाइल।

(४२५)

जलकी टपकती हुई बूंदें पत्थर को भी घिस डालती हैं।

—ल्यू क्रेशियस।

(४२६)

आग्रही को ज़्यादे से ज़्यादे विजय मिलती है।

—नेपोलियन।

(४२७)

विजय पाने के लिए कितना समय चाहिये, यह जानने के ऊपर कई बातो मे, विजय मिलने का आधार रहता है।

—मोन्टेस्कू।

(४२८)

हमेशा आगे बढ़ते जाओ। विश्वास रक्खो। इससे कठिनाई दूर हो जाती है और दीखने वाली अशक्यता भी छिप जाती है।

—जेरेमी कोलियर।

(४२९)

चंचलता को मैं धिक्कारता हूं। जो मनुष्य पारा जैसी मिट्टी का बना हो कि जिससे उसके हृदय मे कोई मज़बूत न रह सके, उसको मै धिक्कारता हूं, उसका तिरस्कार

करता हूं, उसकी अवज्ञा करता हूं और उसको त्यागता हूं। यह मेरी प्रतिज्ञा है।

—बायरन ।

(४३०)

कोई भी काम जब एक बार अच्छे ढंग से शुरू कर दिया जाय, तब, जब तक कि वह पूरा न होजाय तब तक उसको नहीं छोड़ना चाहिये।

—शेक्सपियर ।

(४३१)

पानी जैसी चंचलता से उत्कृष्टता मिल नहीं सकती।

(४३२)

जो तंतु ढीला नहीं पड़ता, जो आंख नीची नहीं नमती और जो विचार भ्रमणा मे नहीं पड़ते, उन्हीं से विजय मिल सकती है।

—बर्क ।

३६—काम और धीरज

(४३३)

सब कामो मे आरम्भ करने के पहले बुद्धिमानी से तैयारी करनी चाहिये।

—सिसरो।

(४३४)

मै किसी आदमी की अशिक्षित आत्मा को खान के सफेद पत्थर के समान समझता हूं, जिसका तब तक कुछ भी सौन्दर्य या सौरभ प्रकट नही होता, जब तक कि चतुर शिल्पकार रगड़ कर उसका सुन्दर रंग, लकीरे या लहरें जो उसमे छिपी होती हैं, प्रकट न करदे और वह सौन्दर्य से चमकने न लगे। —एडीसन।

(४३५)

जो मनुष्य बुद्धिमानी और धैर्य्य के साथ काम करता है, उससे सारी उत्तम वस्तुऍ सहानुभूति रखती है।

—थारो।

(४३६)

जितनी ही शीघ्रता करोगे, उतनी ही देर लगेगी।

—चरचिल।

(४३७)

शीघ्रता में काम बिगड़ता है, शीघ्रता स्वयम् ही अपने पैरो मे बेड़ी डालकर आगे जाना रोक देती है।

—सेनेका।

(४३८)

बुद्धिमानी और धैर्य से चलो, जो तेज दौड़ता है वह अवश्य ठोकर खाता है ।

—मिल्टन ।

(४३९)

मैं उसको पूर्ण और स्वाभाविक शिक्षा मानता हूं जो किसी मनुष्य को स्वीकृत और सार्वजनिक, दोनो कर्त्तव्य न्याय-बुद्धि और धैर्य से करने योग्य बनाती है ।

—मिल्टन ।

(४४०)

बहुत से मनुष्य अपने सिद्धान्तो को हृदय मे जड नही पकडने देते, बल्कि बार बार उखाड़ डालते है । वैसे ही,जैसे बच्चे पुष्प के पेड़ो को, जिन्हे वे बोते हैं, बार बार उखाड़ कर देखते है कि वे ऊग रहे है या नहीं । हमे केवल काम ही नही करना चाहिये, बल्कि धीरज धर कर फल की प्रतीक्षा भी करनी चाहिये ।

—लॉंगफेलो ।

(४४१)

पहली डुबकी मे यदि रत्न न मिले, तो रत्नाकरको रत्न-हीन मत समझो । धीरज के साथ साधन करते रहो । समय पर भगवत्कृपा अवश्य होगी ।

—रामकृष्ण परमहंस ।

३७—दृढ़ संकल्प शक्ति।

(४४२)

सच्चे से सच्चा और खरे से खरा बड़प्पन दृढ़ संकल्प है।

—नेपोलियन।

(४४३)

जिन में दृढ़ संकल्प शक्ति नही है उनमे बड़प्पन नही है।

—शेक्सपियर।

(४४४)

जहाँ दृढ़ और निर्णयात्मक आत्मा देखने मे आती है, वहाँ मनुष्य के आस पास की जगह कैसी खुली हो जाती है और उसको जगह तथा स्वतंत्रता मिलती है, यह देखकर आश्चर्य होता है।

— जान फोस्टर।

(४४५)

बलवान और काम करने की तैयारी रखने वाले मनुष्य के बहुत हाथ होते हैं। उपयोग में आने वाली समीप की हरेक वस्तु पर वह अपना हाथ डालता है। अपने से मिलती जुलती वस्तु को अपनी तरफ खीचने की उसमें आकर्षण शक्ति होती है।

—टी-टी-मेंगरो।

(४४६)

लोगों में बल की कमी नहीं होती, पर संकल्प-शक्ति की कमी होती है।

—विक्टरह्यूगो।

(४४७)

"जीना या मरना" ऐसा जिसने निश्चय कर लिया है, उसको भाग्य ही से कोई जीतता है। ऐसी उमदा निराशा कठिनाई के साथ नष्ट होजाती है।

—कार्निल।

(४४८)

हरेक मनुष्य अपनी क़ीमत अपने ख़ुद के ऊपर रखता है और अपनी इच्छा-शक्ति के अनुसार ही ख़ुद छोटा या बड़ा होता है।

—स्माइल्स।

(४४९)

फ़तेह पाने के लिए जो संकल्प और शक्ति होनी चाहिये, वह यदि नहीं बनाई जाय तो जीवन की बड़ी से बड़ी निष्फलताएँ पैदा हो जाती हैं।

व्हीपल।

(४५०)

भीड़ में आगे बढ़ते हुए मनुष्य के लिए जैसे लोग स्वाभाविक तौर पर जगह देते जाते हैं, वैसे ही जिसका हेतु अपने से आगे होता है उसको आगे बढ़ने देने के लिए मानवजाति जगह कर देती है।

—डिवाइट।

३८—एक ही उद्देश।

(४५१)

यदि मनुष्य अपना जीवन-कार्य सिद्ध होने की इच्छा रखता हो तो उसका एक ही उद्देश होना चाहिये। अर्थात् उसके समस्त लक्ष्यो को ढक देनेवाला, उसको जीवन-मार्ग बताने वाला और उसे अंकुश मे रखनेवाला एक महान् उद्देश उसको धारण करना चाहिये।

—बेइट।

(४५२)

एक महान् उद्देश के साधने की मंगल-कामना जीवन का सौन्दर्य और सुख है।

—जॉन एंजेलो।

(४५३)

पूर्ण विश्वास मनुष्य को उपहास से अलग रखना है।

—जॉन स्टुअर्ट मिल।

(४५४)

विचार, तोप के गोले से भी अधिक वेग से जगत् मे फैलते है। विचार सेना से भी अधिक बलवान है। सिद्धान्त, घुड़सवारो और रथो से भी विशेष विजय पाते है।

—पेकस्टन।

(४५५)

हिम्मत रक्खो और पसंद किये हुए मार्ग से लेश मात्र भी विचलित मत होओ। सफलता कदाचित तत्काल तुझ से दूर रहे और लोग क्रोधित हो जायँ, तोभी निराश मत हो। जिस प्रकार निशाना ताक कर चलाये हुए अचूक तीर की तरफ बार बार नहीं देखा जाता, उसी प्रकार धिक्कार के भयंकर कीले की ओर तू बिल्कुल मत देख: क्योंकि सहनशीलता में से उत्पन्न हुई सफलता अन्त में तेरे पास खड़ी ही रहेगी।

—ग्राइंट।

३६—निश्चय ।

(४५६)

निश्चय करो, इससे तुम मुक्त हो जाओगे ।

—लागफेलो ।

(४५७)

हमारी भाषा मे "हाँ" और "ना" ये दोनो बड़ी ज़िम्मेदारी भरे शब्द है । इनमें से एक इच्छा की अधीनता सूचित करता है और दूसरा इच्छा की अधीनता स्वीकार नही करता । एक भोग विलास की लालसा सूचित करता है और दूसरा चरित्र बल की सूचना देता है । दृढ़ता के साथ "ना" कहने से चारित्र प्रकाशित होता है और तुरन्त "हाँ" कह देने से हमारी दुर्बलता दिखाई देती है ।

—टी० टी० मजर ।

(४५८)

मनुष्य को अपने कार्य का स्वामी बनना चाहिये, कार्य को अपना स्वामी नही बनने देना चाहिये । मै किस तरफ रहूं इसका तत्काल निश्चय करने की उसमें शक्ति होनी चाहिये ।

—पी० डी० आर्मर ।

(४५९)

जगत् एक बाजार है, जहाँ प्रत्येक वस्तु निश्चित भाव में बिकती है । तुमको यदि समय, परिश्रम अथवा बुद्धि-मत्ता के ख़र्च से द्रव्य, आराम, कीर्त्ति, प्रामाणिकता, ज्ञान

आदि वस्तुएँ खरीदना हो तो निश्चयता से खड़े रहो। जो ख़राब वस्तु तुम नही ख़रीद सको, उसका बच्चो की तरह शोक मत करो।

—मेथ्यूज़।

(४६०)

बाल्यावस्था मे ही महान कार्य के विषय में विचार और निश्चय हो सकता है और तरुण अवस्था मे कार्य का आरम्भ होता है। परन्तु सच्चा समय गये बाद और सामर्थ्य नष्ट हुए बाद वृद्धावस्था मे जीवनक्रम लौटा सकना कठिन है।

—ब्राउनिंग।

(४६१)

सावधानता से विचार करो और निश्चयपूर्वक कार्य करो।

—कॉल्टन।
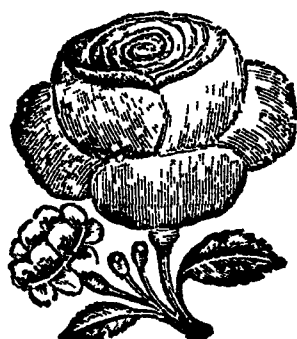
४०—शक्तियों की एकाग्रता।

(४६२)

जगत् मे बड़प्पन की एक ही बात है और वह है एकाग्रता। शक्तियो का नाश कर डालना बुरी से भी बुरी बात है। हमारे उड़ाऊपने मे चाहे गँवारूपन हो चाहे लालित्य हो, पर दोनो मे कुछ भी अन्तर नहीं है। हमारे किसी खेल के विषय को या भ्रमण को कोई उभारे, कि जिस से हम घर जाकर आग्रह के साथ अच्छा काम करे, तो यह बहुत अच्छी बात है।

—एमरसन।

(४६३)

एक प्रतिभा के लिए एक ही विद्या अनुकूल होगी।

—पोप।

(४६४)

तूने सच्चे दिल से काम किया कि तुझे विजय मिली।

—वृतान्त।

(४६५)

जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती जाती है, वैसे वैसे मुझे पूरा विश्वास होता जाता है कि मनुष्य मनुष्य मे, सबल और निर्बल मे, बड़े और छोटे मे जो भेद मालूम होता है, वह शक्ति का—आग्रह का—भेद है।

—फावेल बक्सटन।

(४६६)

एक ही विषय पर अपनी शक्तियाँ एकाग्रता के साथ लगा देने से निर्बल से निर्बल प्राणी भी कुछ कर सकता है। मगर एक बलवान से बलवान मनुष्य भी अपनी शक्तियो को अनेक विषयों मे बिखेर दे तो वह कुछ भी नहीं कर सकता ।

—कार्लाइल ।

(४६७)

मैं अपना हरेक काम ऐसा सोच कर करता हूँ कि मानो उस समय दुनिया मे दूसरी कोई चीज़ होती ही नहीं है ।

—चार्ल्स किंगस्ली ।

(४६८)

जो मनुष्य अपनी शक्ति को कई विषयो मे फैला देता है, वह अपनी शक्ति खोता है। उसकी शक्ति के साथ उसका उत्साह भी चला जाता है, और उत्साह बिना पूरी विजय किस तरह मिल सकती है !

—डा० मेथ्यू ।

(४६९)

सट्टे की तरह ऊपरी अभ्यास मत करो। ऐसा सब अभ्यास व्यर्थ जाता है। कुछ योजना बनाओ, कुछ हेतु रक्खो और बाद को उनके लिये प्रयास करो।

—वाटर्स ।

४१—छोटी छोटी वस्तुओं का महत्त्व।

(४७०)

किसी छोटी वस्तु को क्षुद्र मत समझो। छोटी छोटी रेत के कणों से पर्वत बनते है, क्षण क्षण से वर्ष बनता है और छोटी छोटी वस्तुओं से जीवन बनता है।

—यग।

(४७१)

मनुष्य लघुता के कारण ही क्षुद्र वस्तुओं का महत्त्व नही समझता।

—वेंडल फिलिप्स।

(४७२)

बहुधा हमारी दुर्बलता से ही हमारे चरित्र का उत्थान होता है और पवन से उड़ा कर लाये हुए क्षुद्र बट बीज से भीमाकार बट-वृक्ष उत्पन्न होता है, जो भयंकर आंधी मे भी दृढ़ता से ऊँचा सिर किये हुए खड़ा रहता है।

—बुलवर।

(४७३)

केवल एक बीज बरगद के सहस्रो वनो का जन्मदाता होता है।

—एमरसन।

(४७४)

चीटी हाथी का काल है।

—कहावत।

(४७५)

तिनके तिनके इकट्ठे करके रस्सा बनाया जाता है, और उस रस्से से हाथी तक बांधे जाते है।

—चाणक्य।

(४७६)

जो मनुष्य एक साथ बहुत से सत्कार्य करने की प्रतीक्षा करता है वह कभी कुछ नही कर सकता। जो पास है, उसे ही सत्कर्म मे लगाओ, उसे तुच्छ वस्तु मत समझो।

—डा० जानसन।

(४७७)

छोटी वस्तुओ से मनुष्य प्रगतिशील बनता है।

—नेपोलियन।

(४७८)

छोटे छोटे प्रहार मोटे मोटे वृक्षो और पत्थरो तक को तोड डालते है।

—फ्रेकलिन।

(४७९)

एक वाक्य ने अनेक मनुष्यो की मित्रता निश्चित की है और उसी ने अनेक राज्यो का भाग्य निश्चित किया है।

—बेन्थम।

(४८०)

छोटे छोटे उदाहरणो की तरफ़ ध्यान देने वाला विद्यार्थी परीक्षा मे सर्व प्रथम आ सकता है।

—वेबस्टर।

४२—उदारता ।

(४८१)

सूर्य की कितनी ही किरणे इस कृतघ्न और रीते आकाश के मोटे विस्तार मे व्यर्थ पड़ती है और उन किरणो का बहुत छोटा भाग ग्रह और भूमि पर गिरता है, तोभी इस से सूर्य को शोक नही होता ।

—एमरसन ।

(४८२)

जो वीर सैनिक मेरे पास खड़ा रह कर मनुष्य जाति के हित के लिए लड़ता है; उसका धर्म और मेरा धर्म क्या एक है, यह मुझे उससे पूछना चाहिये ? जिस मित्र को मै चाहता हूं और वह मेरे सम्प्रदाय को नही मानता हो, तो क्या मुझे उसका परित्याग कर देना चाहिये ?

—मूर ।

(४८३)

यदि ईश्वर तेरा पिता है तो मनुष्य तेरा बन्धु है ।

लेमरटाइन ।

(४८४)

यदि तू दूसरो के लिए भला बनता है तो ख़ुद के लिए भी भला बनता है ।

—फ्रेंकलिन ।

(४८५)

दूसरो के दोषो की तरफ मत देखो, और यदि उनमे दोष मालूम भी हो तो भी उनकी तरफ न देखते हुए उसके

सद्‌गुणों की तरफ़ देखो, यही बड़प्पन है और यही प्रेम का कार्य है।

—इला व्हीलर विल्कोक्स।

(४८६)

यदि तुम अपने शत्रुओं का गुप्त इतिहास वांच सकते हो तो तुमको प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे इतना शोक और दु:ख मालूम होगा कि तुम्हारे मन में उसका किंचित मात्र भी शत्रु-भाव और विरोधाभास नहीं रहेगा।

—लागफेलो।

(४८७)

किसी भी मनुष्य मे दोष मत निकालो, क्योंकि तुम ख़ुद अनेक दोषो वाले हो।

—शेक्सपियर।

(४८८)

यदि मेरे एक शब्द से भी किसी का जीवन अधिक तेजस्वी बन सकता हो तो हे प्रभु, मेरे बोलने मे तू पूर्ण-रूप से सहायक बन।

—प्रोकटर।

४३—अच्छा व्यवहार ।

(४८६)

कोई भी लड़का हो, उसको सत्कार की रीति और निपुणता सीखनी चाहिये । इस से वह जहां जायगा वही उसको महलो तथा धन दौलत पर प्रभुता मिलेगी । उसे कमाने की और उसका मालिक बनने की ज़रूरत नही रहेगी, बल्कि लोग ही उससे उस मे दाख़िल होने की और मालिक बनने की चाह करेगे ।

—एमरसन ।

(४९०)

तुझे जो कुछ प्राप्त करना हो, उसे तलवार से नहीं; पर मुस्कराहट से प्राप्त कर ।

—शेक्सपियर ।

(४९१)

अच्छा कुल और अच्छे कुल मे जन्म, ये बातें अच्छी हैं, पर अच्छी रीति भाति सबसे अच्छी बात है ।

—स्केच कहावत ।

(४९२)

जीवन का तीन चौथाई भाग व्यवहार मे आया हुआ है ।

—मेथ्यू आर्नोल्ड ।

(४६३)

जिस मनुष्य का पु.ख्ता तौर पर अच्छा स्वभाव नहीं है उसके अच्छे संस्कार हो ही नही सकते, ऐसा मैंने जाना है।

—बुल्वर ।

(४६४)

पुरुष के हृदय मे वीरता उत्पन्न करने के लिए स्त्री मे सभ्यता के असली सस्कार आने ही चाहिये ।

—मेडम डी नेकर ।

(४६५)

सभ्यता के लिए हमेशा पूरा समय मौजूद रहता है। उसके लिए ज़िन्दगी थोडी नहीं है। हम हमारे कुटुम्बी जनों से और नौकरो से जो वर्ताव करते हैं उसी मे हमारे व्यवहार की कसौटी समाई हुई है।

—एमरसन ।

(४६६)

सुधरे हुए जन समाज मे वाहर के आकर्षण से हमको वहुत मान मिलता है।

—जान्सन ।

(४६७)

मै कभी निन्दा नहीं सुनता, क्योंकि वह अगर झूठी हो तो ठगा जाने की जिम्मेदारी मेरे सिर आ जाय। और अगर वह सच्ची हो तो जो विचार करने के लायक मनुष्य नही है, उनका तिरस्कार करने का दोष मेरे सिर पर आ जाता है।

— मोन्टेस्फवी ।

४४—आलस्य ।

(४९८)

आलस्य जीवित मनुष्य की क़ब्र है ।

—कूपर ।

(४९९)

धन्धो मे ग़ैर हाज़िरी विश्राम नही है ।

—कूपर ।

(५००)

खोया हुआ धन उद्योग से फिर प्राप्त होगा, नष्ट हुआ आरोग्य मिताहार से फिर मिलेगा, भूला हुआ ज्ञान अभ्यास से फिर ताजा होगा; परन्तु खोया हुआ घण्टा क्या किसी ने फिर देखा है या खोया हुआ अवसर फिर पाया है ? नही ।

—मिसेज़ सिगुर्नी ।

(५०१)

आलसी मनुष्य बिना कांटे का घड़ियाल है ।

—कूपर ।

(५०२)

कुछ भी नही करना—कुकर्म करने का आरम्भ है ।

—क्रेफ्टस ।

(५०३)

तुम अगर प्रमादी हो तो विनाश के मार्ग पर हो ।

—बीचर ।

(५०४)

चक्की का पत्थर और मनुष्य का हृदय सदा चक्राकार फिरा ही करते हैं। यदि इनके पास कुछ पीसने को न हो तो ये अवश्य ही अपने अंग को पीस डालते है।

—वोन लॉगो ।

(५०५)

काम प्रत्येक मनुष्य का प्राणरक्षक है।

—एमरसन ।

(५०६)

परिश्रम ही जीवन है। आलसी मनुष्य निराश हुआ करता है, शोक किया करता है, पर उसे काम मे जुट कर देखना चाहिये कि ये बाते अब भी मेरे मे है या गईं!

—मिसेज आस्गुड ।

(५०७)

खो गया! खो गया!! मेरा अमूल्य रत्न खो गया!!! उसके आस पास शुद्ध और प्रकाशमान चौबीस बड़े बड़े हीरे जड़े थे, और प्रत्यक हीरे के अन्दर छोटे छोटे साठ हीरे लगे हुए थे, जिनकी चमकाहट बहुत थी।

—मिसेज सिगुर्नी ।
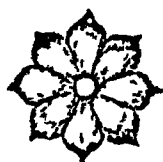
४५—सावधानता।

(५०८)

सावधानता प्रामाणिकता की सगी बहन है।

—सि० सिमन्स।

(५०९)

महनत करने की अनंत कला मे प्रतिभा समाई हुई है

—कारलाइल।

(५१०)

आधे दिल से बनी हुई चीज को मै धिक्कारता हूं। वह अगर सच्ची है तो उसको पूरे मन से और बहादुरी से करो और अगर खोटी हो तो करो ही मत।

—गिल्पीन।

(५११)

एक चीज को पूरी रीति से और बराबर ढंग से करने पर ही उसके अच्छी होने का आधार है।

—ईरानी कहावत।

(५१२)

तुम्हारे मित्रो मे या दुश्मनो मे ईसाइयो मे या मूर्ति-पूजको मे, जहाँ तुमको मालूम पड़े वहाँ से सत्य को ग्रहण करो। पुष्प जहाँ भी खिलता है, वही वह सुन्दर मालूम होता है।

—वाटस।

(५१३)

एक भाषा अगर अच्छी तरह सीख ली जाय तो वह २० भाषाओं का ऊपरतली ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा ज़्यादे अच्छी है। ✓

—राबर्ट वाटर्स।

(५१४)

जल्दी में अच्छी तरह काम कर सकने वाले कारीगर आपको कोई भी नहीं मिलेंगे। अच्छा काम करना हो तो धीरे धीरे ही करना चाहिए।

—चासर।

४६—महत्वाकांक्षा ।

(५१५)

मनुष्य जितना सम्पादन कर सके, उसकी अपेक्षा उसका लक्ष्य अधिक लम्बा होना चाहिये; नहीं तो फिर स्वर्ग किस लिए है ?

—राबर्ट ब्राउनिंग ।

(५१६)

जो आदमी अपनी योजना की इमारत आकाश के नीचे बनाते है, वे उसे बहुत नीची बनाते है ।

—यंग ।

(५१७)

नीची से नीची गहराई से अधिक से अधिक ऊँचाई मे जाने का मार्ग खुला हुआ है ।

—कारलाइल ।

(५१८)

आप अगर महत्वाकाक्षा रखते है, तो केवल यही आपकी महत्ता है ।

—जीन इञ्जलो ।

(५१९)

एक ही वस्तु के लिए जिन्दगी भर, अकेले ही हाथ से और आग्रह से जिसने कोशिश की हो, और वह उसे किसी अंश तक भी न मिली हो, ऐसा कोई भी मनुष्य

क्या कभी आपने देखा है ? जो मनुष्य हमेशा आकांक्षा रक्खे पर उन्नत न हो, शौर्य, उदारता, सत्य, हृदय की सचाई आदि सद्गुणों की आजमाइश करे पर लाभ न हो और उसका सारा प्रयत्न निष्फल जाय, भला ऐसा कभी हो सकता है ?

—थारो ।

(५२०)

जगत् के नीचे जाने की, अवनत होने की और प्रतिभा का सामना करने की व्यर्थ कोशिश के मुक़ाबले में जगत को उन्नत करना, उसको पवित्र करना और अपने को मिली हुई ईश्वर की बख्शिश से उस का उद्धार करना, यह प्रतिभा का पृथ्वी के ऊपर का धर्म कार्य है ।

(५२१)

अगर सत्य को मैंने अपने हाथ में पकड़ रक्खा हो तो मुझे चाहिये कि मुट्ठी खोल कर उसे छोड़ दूँ, जिससे मैं फिर उसके पीछे पड़ कर उसे पकड़ सकूँ ।

—मेलीब्रान्दा ।

(५२२)

हरेक जिन्दगी में कितने ही असली स्थान खाली होते हैं जिन्हें आदर्शों से भरना चाहिये । अगर ऐसा न किया जाय तो वे हमेशा के लिए निष्फल रह जाते हैं ।

—जुलियावार्ड हो ।

४७—उत्साह की विजय।

(५२३)

जिस महनत से हम को आनन्द मिलता है; वह व्याधि की दवा हो जाती है, अर्थात् वेदना का निवारण करने वाली बन जाती है।

—शेक्सपियर।

(५२४)

मनुष्य किसी विषय मे जब तक उभारा नहीं जाता, तब तक उसका महत्व मालूम नहीं होता।

—मोटेन।

(५२५)

उत्साह जैसी छूत वाली अर्थात् उड़ कर लगने वाली चीज़ दूसरी कोई नहीं है। पत्थर को भी वह हिला देती है, पशुओं को भी वश मे कर लेती है। सच्चे दिल की वह प्रतिभा है और उसके बिना सत्य को विजय नहीं मिलती।

—बुल्वर।

(५२६)

काम करने की अच्छी से अच्छी रीति आग्रह से मिलती है।

—साल्विनी।

(५२७)

अपने काम के लिये उत्साह रखने वाला और ऊँचे दिल से काम करने वाला ही, महनत का अच्छे से अच्छा फल है।

—हारेस ग्रीली।

(५२८)

सब कलाओ के सर्वोत्कृष्ट काम युवावस्था में हुए हैं।

—रस्किन।

(५२९)

जो कुछ महान् है, वह सब जवानों ने किया है।

—डिज़रायली।

(५३०)

प्रभु के राज्य में जगत् का कल्याण जवानों के हाथ में है।

—डा० ट्रम्बुल।

(५३१)

शायद हम हमारा उत्साह न खो दे, इसके लिए हमको सावधान रहने की जरूरत है। किसी भी बात के लिए हमको हमेशा शुभ अभिमान रहना चाहिये। जो हमे उन्नत करे उसको चाहने के लिए हमको कोशिश करनी चाहिये। जो बात हमारे जीवन को सम्पतिवान् बनावे, सुन्दर बनावे, उसका रस लेने की हमको हमेशा कोशिश करनी चाहिए।

—फिलिप ब्रुक्स।

४८—पराजय में विजय ।

(५३२)

ऐसा कहा जाता है कि सर्वोत्तम मनुष्य अपने दोषों से और अपनी भूलों से ही बना होता है।

—शेक्सपियर ।

(५३३)

जो बड़ा भारी धर्म का काम करते हुए मरते हैं, वे निष्फल हुए नही कहे जा सकते ।

—बायस ।

(५३४)

निष्फलताए विजय के स्तंभ के समान है।

(५३५)

'किसी रोज भी हम निष्फल नही हुए', इस बात मे हमारी बड़ी भारी कीर्त्ति नही है, बल्कि कीर्त्ति इस बात मे समाई हुई है कि हम हर वक्त गिरे और उसी वक्त खड़े हो जायं ।

—गोल्डस्मिथ ।

(५३६)

आपत्ति हीरे की कणी के समान है, जिससे ईश्वर अपने जवाहिर को ओप देता है ।।

—लेटन ।

(५३७)

ईश्वर के प्रीत्यर्थ जिनका नाश होता है, वे नक्षत्र रूप से प्रकाशित होते है।

—बेनजान्सन ।

(५३८)

पराजय एक प्रकार की शिक्षा है। किसी भी अच्छी वस्तु की या अच्छी हालत की तरफ जाने की वह पहली सीढी है।

—वेंडेल फिलिप्स ।

(५३९)

बडी भारी कारगुजारी का अन्त चाहे निराशामय हो, तो भी मानवशक्तियो की वह एक निशानी है।

—ड्रायडन ।

(५४०)

प्रारब्ध भले ही अपने सारे बाण मुझ पर छोडे, पर मेरी आत्मा ढाल की तरह उन सबको झेल सकेगी।

—ड्रायडन ।

(५४१)

प्रारब्ध जैसे मेरा नहीं है, वैसे ही मै उसका नहीं हूं।

(५४२)

आत्मा को जीतने वाला कोई नहीं है।

—ड्रायडन ।

(५४३)

कई बार ऐसा होता है कि जो निष्फल हो जाते है, वे ही सच्चे से सच्चा जीवन बिताते है।

—मायरन हंफोर्ड बियोन ।

४६—विजय कैसे मिलती है ?

(५४४)

देव हरेक मनुष्य को हरेक चीज वाजिब क़ीमत पर बेचता है ।

—एमरसन ।

(५४५)

बराबर रंग देने मे सारा जीवन खप जाता है। यह काम सस्ता या विना क़ीमत का हो नहीं सकता ।

—रस्किन ।

(५४६)

प्रारब्ध कोई चीज नहीं । विचार और विजय के बीच में ईश्वर अकेला ही दलाल है ।

—बुल्वर ।

(५४७)

✓हम जो करलेंगे वही अपना है ।

—फ्रेंकलिन ।

(५४८)

✓ कुदरत ने प्रत्येक अच्छी चीज पत्थर जैसी सख्त मुट्ठी में रक्खी है। सिर्फ मेहनत से ही वह छूट सकती है।

—फ्रेंकलिन ।

(५४९)

✓ हरेक कला हथोडे से और हाथ से खड़ी होती है ।

—फ्रेंकलिन ।

(५५०)

अपना आश्रय रक्खो। अपने साधन के ऊपर से ही अपना निभाव करो। यह लक्ष्मी की गोद में खेलने जैसा काम है।

—फ्रेंकलिन।

(५५१)

जो मनुष्य कभी काम मे नहीं लगेगा, उसकी सहायता ईश्वर नहीं करेगा।

—सोफोफिलस।

(५५२)

अगर तुम कोई भी काम अच्छी रीति से कर सको, या जो करो उसे कीर्ति का विचार छोड़ कर करो. तो इन दोनो प्रकार के कामो में विजय की कुंजी समाई हुई है।

—लांगफेलो।

(५५३)

स्पष्ट और निश्चयात्मक हेतु के सिवाय विजय का दूसरा मार्ग नहीं है। चारित्र्य, शिष्टता, पदवी या किसी भी वस्तु की प्राप्ति में हेतु समाया हुआ होता है।

—टी-टी-मंगर।

(५५४)

मानव जाति विजय की पूजा करती है, पर इस बात का बहुत कम विचार करती है कि वह किस साधन से

मिलती है, उसके लिए रात-दिन कितना परिश्रम करना पडता है और फिर भी वर्षों तक वह दूर दूर भागती जाती है। फिर, परिश्रम के परिणाम मे अगर विजय न मिले तो परिश्रम का कुछ भी मूल्य नहीं गिना जाता।

५०—अपना मान और अपना विश्वास।

(५५५)

पहले तुम तुम्हारे मित्र बनो, बाद को दूसरे भी बनेंगे।

—स्केच कहावत।

(५५६)

जो मनुष्य कुछ भी कर सके वह राजा है।

—कार्लाइल।

(५५७)

अपने मान की लगन धर्म की दूसरी श्रेणी की लगन है। सब प्रकार के दुर्गुणों के लिए यह अंकुश के समान है।

—बेकन।

(५५८)

स्वमान, आत्मज्ञान और आत्मनिग्रह, इन तीन सद्गुणों से मनुष्य का जीवन सबसे ऊंची सत्ता पा सकता है।

—टेनीसन।

(५५९)

सारे सद्गुणों की कुञ्जी अपना मान है।

—जानहर्शल।

(५६०)

सब से पहले तुम्हारी जाति का सन्मान रक्खो।

—पीथागोरस।

(५६१)

अपनी जाति की बेइज्जती करने वाले हमी हैं।

—जे० जी० हालेण्ड।

(५६२)

मेरे सिवाय मेरी जाति का नुक़सान करने वाल दूसरा नहीं है। जो नुकसान मैं उठा रहा हूं, उसे मै अपन साथ लिए फिरता हूं और अपनी खुद की भूल से ही दु ख भोगता हूँ।

—सेंट बर्नार्ड

(५६३)

अपनी जाति का अविश्वास बहुत करके अपन निष्फलता का कारण है। बल के विश्वास मे बल समाय हुआ है और जिनको अपनी जाति मे या अपनी शक्तिय मे विश्वास नहीं है, वे चाहे जैसे बलवान हो, तो भ निर्बल से निर्बल हैं।

—बोवी

(५६४)

पवित्र और योग्य स्वमानवृत्ति से बखान करने लायक साहस उत्पन्न होता है।

—मिल्टन

(५६५)

मैं क्या हूँ, इस बात का ज्ञान अगर मनुष्य को होगा तो वह यह भी फौरन् जान जायगा कि मै क्या होन चाहता हूं।

—स्फेलिंग

५१—जीवन को हम जैसा बनाते हैं वैसा बनता है।

(५६६)

भावी जीवनरूपी कपड़े मे हम हमारा ही रंग दे पकते है। और प्रारब्ध के प्रदेश मे हम जो बोते है वही काटते हैं।

—व्हीटियर।

(५६७)

प्रत्येक मनुष्य अपनी ही कृतियों का पुत्र है।

—सर्वेण्टिस।

(५६८)

मनुष्य मे उज्ज्वल क्या है, यह हमको ढूँढ निकालना चाहिये, या ऐसी श्रद्धा रखनी चाहिये कि उसमें उज्ज्वलता है

(५६९)

प्रकाश पाने के लिए परिश्रम करने वालो की आत्मा के अंदर ही प्रकाश मौजूद है।

(५७०)

हमारे जीवन रूपी सूर्य के प्रकाश मे हमेशा एक काला दाग होता है, और वह हमारी ही छाया होती है। तुम इस छाया से दूर रहो।

—कारलाइल।

(५७१)

फिर जवान होने मे क्या लाभ है? मनुष्य अगर कोशिश करे तो बुढ़ापे मे ही जवान जैसा सुन्दर बन सकता है।

—मयूर रेड केप।

(५७२)

जीवन, कमल पर जल की बूँद के समान अत्यंत चंचल है, जल्दी चेतो और भवसागर से पार होने के लिए क्षण भर साधुओ का संग करो, यही भवसागर की नाव है।

—श्री शंकराचार्य।

(५७३)

जिनको जागना है, अभी जग जाओ। यही जागने की वेला है। जब पांव पसार कर सो जाओगे, तब क्या जागोगे ?

(५७४)

जिसका मन वश मे है, वही जगद्गुरु है। जैसे कच्ची छत मे जल भरता है, वैसे ही अज्ञानी के मन मे कामनाएँ जमा होती है।

—धम्मपद।